मूल्य रु। ५-००

मासिक

श्री स्वामिनारायण

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महिने की ११ तारीख सलंग अंक १४६ जून-२०१९

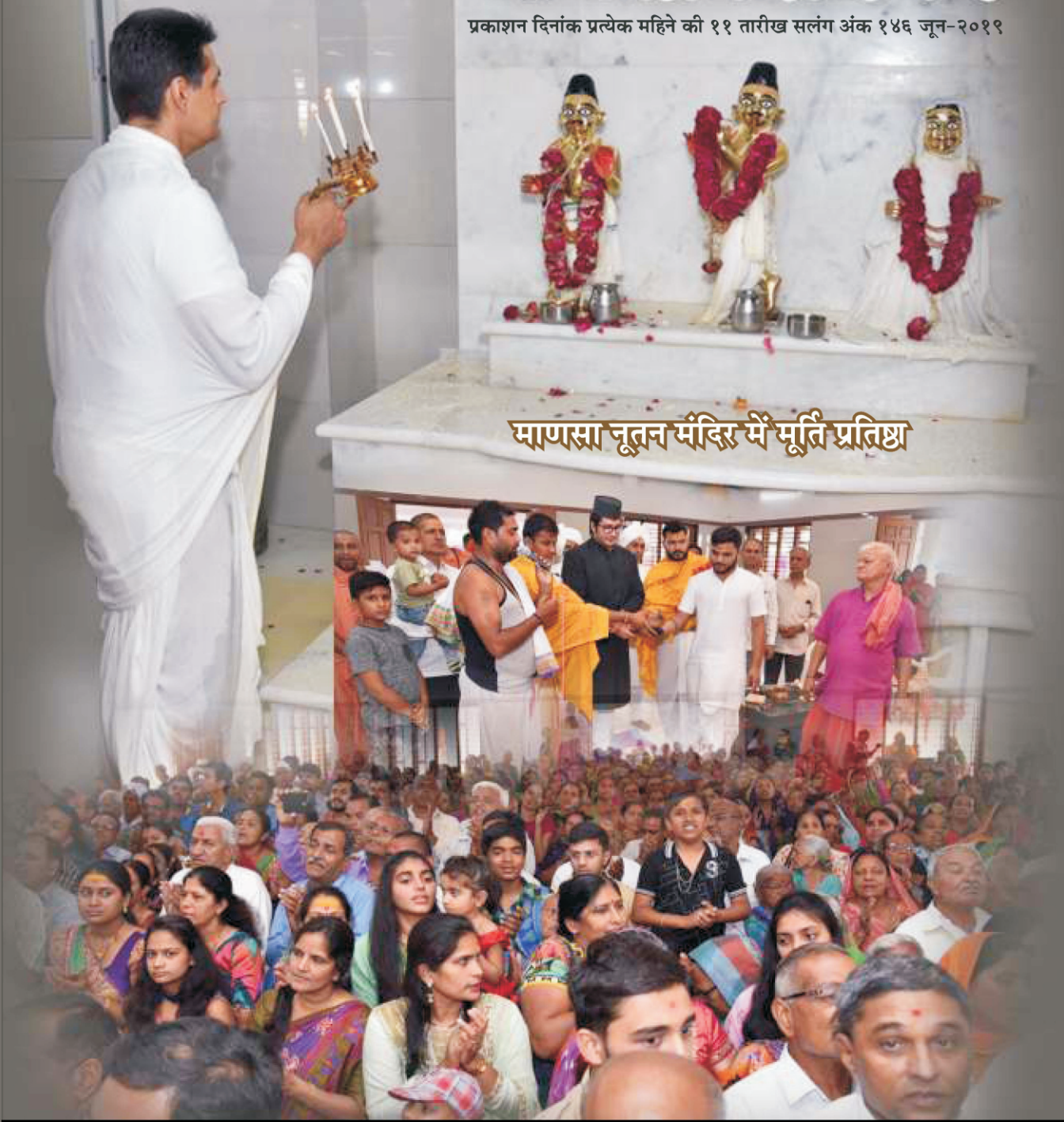

माणसा नूतन मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

1

2

3

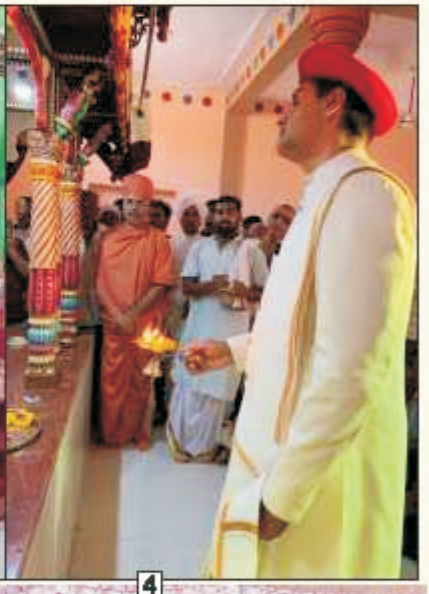

4

(१) अहमदाबाद कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिरमें ठाकुरजी का चंदन का वाघा का दर्शन। (२) मूली मंदिर में ठाकुरजी का चंदन का वाघा दर्शन। (३) जेतलपुर मंदिर में ठाकुरजी का चंदन का वाघा का दर्शन। (४) चंद्रासण (पूर्णानंद स्वामी की कर्मभूमि) श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा करते हुए। और उस अवसर पर आयोजित यज्ञ में श्रीफळ (नारियल) चढ़ाते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री।

NND - CALENDAR

अहमदाबाद कालुपुर मंदिर द्वारा
केलेन्डर तथा निर्णय की नये एप एन्ड्रोइड और
आई.ओ.एस. के लिये डाउन करने के लिये उपलब्ध

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र
वर्ष - १३ ● अंक : १४६
जून-२०१९

संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स :
२७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com

श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत
स्वामी)

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
मो. ८२३८००१६६६
मो. ९०९९०९८९६९
magazine@swaminarayan.in
www.swaminarayan.info

पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in
मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	श्रीजी महाराज द्वारा स्थापित नवधाम	०६
०४.	मंद मंद हँसते श्रीहरि का दर्शन	१०
०५.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के मुख से अमृत वचन	११
०६.	पूज्य महाराजश्री का कल्याणकारी संकल्प	१४
०७.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	२०
०८.	सत्संग बालवाटिका	२२
०९.	भक्ति सुधा	२४
१०.	सत्संग समाचार	२७

अस्मदीयम्

यह युग तकनीकि युग है । विज्ञान का विकास होता गया । वैसे-वैसे आधुनिक तकनीकि हमारे घर में प्रवेश करने लगा है । समयानुसार सब आवश्यक है । लेकिन अधिकता नही होनी चाहिए । कितनी भी गर्मी या सर्दी हो सहन करने की क्षमता होनी चाहिए । हमने पर्यावरण पर ध्यान नही दिया । इस कारण से सबको सहन करना पड रहा है । वर्तमान समय में मनुष्य ने प्रकृति द्वारा सर्जित जंगल, वन, नदी, सरोवर, समुद्र पर्वत, खनिजतत्वो की खाने इत्यादि का नाश कर रहा है। जिसके फल स्वरुप अतिशय गर्मी, ठंडक, अतिवृष्टि अकाल जंगल में प्रचंड आग भूकंप, तूफान, सुनामी जैसी प्राकृतिक संकट का भोग बनना पडता है । यदी हम अभी से पर्यावरण की रक्षा के लिये जागृत रहेगे तो प्रभाव अवश्य पडेगा । सरकार की तरफ से अधिक जागरुकता आयी है । लेकिन हमें स्वयं जागृत होना है । हम अपने घर से शुरुआत करे तो निश्चित लक्ष्य तक पहुंचेगे ।

हमारे ईष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवानने आज से २२५ वर्ष पहले शिक्षापत्री के २१२ वे श्लोक के ३२ वें श्लोक में स्पष्ट लिखे है । 'शास्त्र ने लोगो को मलमूत्र त्यागने के लिये वर्जित स्थान बताये है । जो जीर्ण देवालय, नदी, तालाब, रास्ते पर बोये गये खेत में, वृक्ष की छाया में बाग-बगीचे में आदि पर मूल-मल त्याग नही करना चाहिए । तथा थूँकना भी नही चाहिए। इस प्रकार सभी लोग व्यवहार करे तो सार्वजनिक जगहो पर लिखना बंद हो जायेगा । संसारी व्यक्ति अवश्य इन बातो का पालन करें । पानी भी व्यर्थ न करे उस पर भी ध्यान दे । इस चातुर्मास में श्रीहरि के आठ नियमो में से यदि कोई नियम ले तो उसमें परिवार के हिसाब से एक वृक्ष अवश्य लगाये । उसकी देखरेख करें । विश्व में इतने अधिक वृक्ष कटते है । उसके सामने वृक्षारोपण नही होता है ।

जितना पर्यावरण की रक्षा करेगे । उनती प्रकृति हमारी रक्षा करेगी । हमारी यह सूचना प्रत्येक हरिभक्त श्रीहरि की आज्ञा मानकर अवश्य पालन करेगे । ऐसा आप के उपर हमारी श्रद्धा है ।

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की

रुपरेखा

(मई-२०१९)

१	लुनावाडा बहनो का श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर आगमन।
२-३	श्री स्वामिनारायण मंदिर भुज (कच्छ) कथा के अवसर पर आगमन।
६	हरिपर (ता. ध्रांगध्रा मूली देश) नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा के अवसर पर आगमन।
८-९	श्री स्वामिनारायण मंदिर भुज (कच्छ) पाटोत्सव अवसर पर आगमन।
१०	माणसा नूतन शिखरबद्ध श्री स्वामिनारायण मंदिर में ठाकुरजी के पाटोत्सव-अभिषेक अवसर पर आगमन।
११	मीठाखली अहमदाबाद नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा के अवसर पर आगमन। वहाँ से देवपुरा (ता. विरमगाम) बहनो का नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा अवसर पर आगमन।
१४	श्री स्वामिनारायण मंदिर बायल - (साबरकांठा) मूर्ति प्रतिष्ठा अवसर पर आगमन।
१६	पलसाणा गाँव में श्री स्वामिनारायण मंदिर में ५० वाँ पाटोत्सव अवसर पर आगमन।
१९	मोरबी (प्राचीन) श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव पर आगमन।
२०	श्री स्वामिनारायण मंदिर पेथापुर पाटोत्सव अवसर पर आगमन।
२१-२२	श्री स्वामिनारायण मंदिर भुज (कच्छ) आगमन।
२४	श्री स्वामिनारायण मंदिर कुंडाल (ता. कडी) पाटोत्सव अवसर पर आगमन।
२८	मेमनगर भक्तिनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर का २० वाँ पाटोत्सव महोत्सव पर आगमन।
२९-३०	हिंमतपुरा श्री स्वामिनारायण मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा अवसर पर आगमन।
३१	श्री स्वामिनारायण मंदिर भुज (कच्छ) पर आगमन।

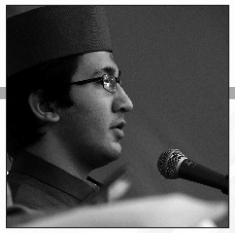

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(मई-२०१९)

५	श्री स्वामिनारायण मंदिर उनावा पाटोत्सव पर आगमन।
७	श्री स्वामिनारायण मंदिर पलसाना स्वर्ण जयंती पाटोत्सव महोत्सव अवस पर आगमन।
९	नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर माणसा में आगमन।
११	श्री स्वामिनारायण मंदिर बोपल पाटोतसव अवसर पर आगमन।
१५	श्री स्वामिनारायण मंदिर पेथापुर पाटोत्सव अवसर पर आगमन।
१६-२२	स्वीडन में सत्संग युवा कैम्प अपनी अध्यक्षता में पूर्ण हुआ। वहाँ से लंदन आगमन।

श्रीजी महाराज द्वारा स्थापित नवधाम

– साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

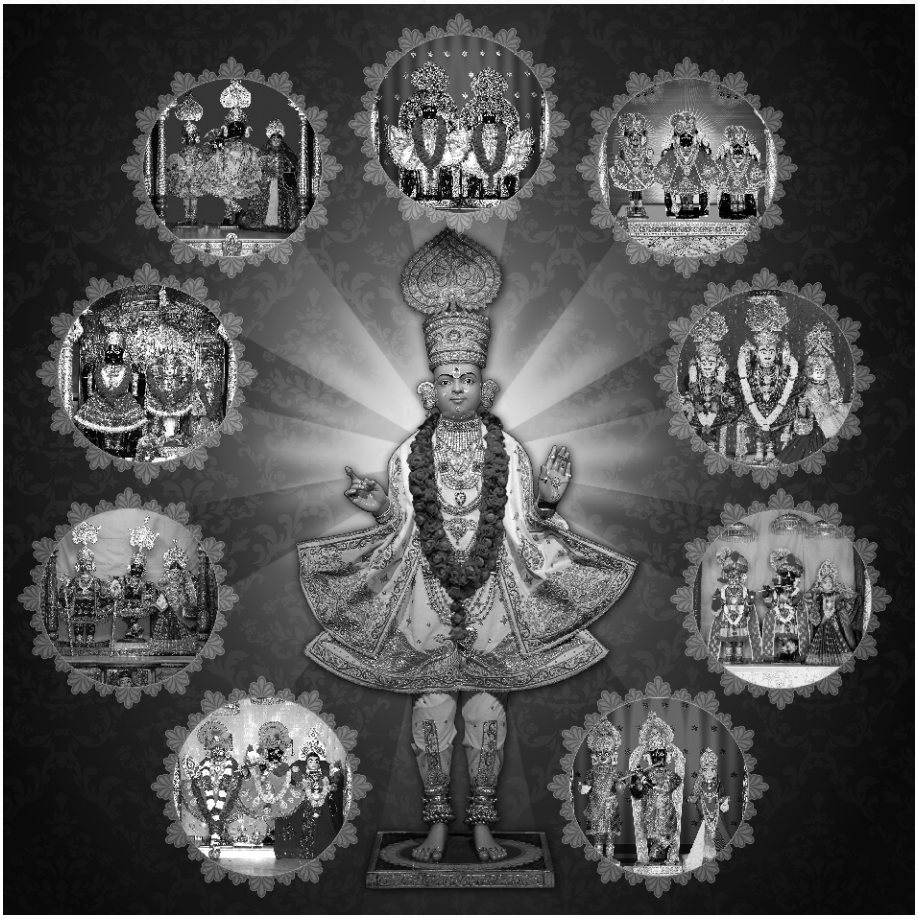

इष्टदेव भगवान श्री स्वामिनारायण महाप्रभुने अपने हाथो द्वारा नव धाम का निमार्ण सद्गुरु संतो द्वारा उसमे अपने हाथो द्वारा नरनारायणदेव आदि मूर्तियो की प्रतिष्ठा करके लीला के प्रसंग संतोने अपनी रचनाओ का कई वर्णन वार्ता ग्रन्थो में किये है। उसमें से कई शास्त्रो का प्रमाण लेकर नवधाम की प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव का सन्दर्भ उनके साथ प्रस्तुत किये है। जिससे मुमुक्षुओ तथा तीर्थो की प्राण प्रतिष्ठा का तिथिवार यथार्थ ज्ञान होता है।

नोंध: इस लेख में दिये गये पुस्तको में सर्वमंगल स्त्रोत्र की पुस्तिका भूज स्वामिनारायण मंदिर की तरफ से छपे ''सर्व मंगल स्तोत्र'' नाम की पुस्तिका वि.सं. १९९० में उस समय के आचार्य महाराजश्री वासुदेवप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से भुज मंदिर के उस समय के महंत स्वामी स.गु. पुराणी स्वामी बालकृष्णदासजी के मूल नंद संतो मे से लेखक स.गु. अवदातानंद स्वामी के हाथो द्वारा लिखे प्रत के आधार पर अहमदाबाद के उत्कृष्ट मुद्रालय में छपा है। उसका आधार लिया गया है। – निर्गुण शास्त्री)

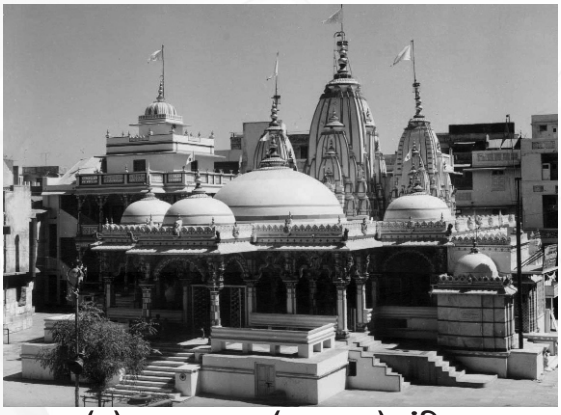

(१) अहमदाबाद (कालुपुर) मंदिर
प्रतिष्ठा : विक्रम संवत १८७८, फाल्गुन सुद-३
ई.स. २४-२-१८२२

श्रीमद् सत्संगिजीवन : प्रकरण-५, अध्याय-३३, श्लोक-६०
श्रीमद् सत्संगिभूषण : अंश-३, अध्याय-३३, श्लोक-१७
भक्तचिंतामणी : प्रकरण-८६, कडी-४७
श्री घनश्याम लीलामृत सागर : तरंग-७८, कडी-८
श्रीहरिकृष्ण लीलामृत : अध्याय-८५, श्लोक-५०-११
श्री स्वामिनारायण विचरण लीलामृज : विश्राम-५७
श्री हरिचरित्रामृत : अध्याय-४९, कडी-१९
श्रीहरिलीला सिंधु : रत्न-४२, तरंग-३३
पुरुषोत्तम प्रकाश : प्रकार-२५, कडी-८
श्रीहरिचरित्रामृत सागर : पुर-२२, तरंग-१४, कडी-५
श्रीहरि लीला सुधाकर : अध्याय-८९, श्लोक-८७-८८
सर्वमंगल स्तोत्र : मंत्र-७८३

(२) मूली मंदिर
प्रतिष्ठा : विक्रम संवत १८७९, महा सुद-५
ई.स. १७-१-१८२३

श्रीमद् सत्संगिजीवन : प्रकरण-४, अध्याय-४४, श्लोक-३८
श्रीमद् सत्संगिभूषण : अंश-३, अध्याय-५४, श्लोक-८
श्री घनश्याम लीलामृत सागर : तरंग-७८, कडी-५८
श्रीहरिकृष्ण लीलामृत : अध्याय-१०, श्लोक-११-१२
श्री स्वामिनारायण विचरण लीलामृज : विश्राम-१०६
श्री हरिचरित्रामृत : अध्याय-६२, कडी-२१
श्रीहरिलीला सिंधु : रत्न-१३, तरंग-१७
श्रीहरि लीला सुधाकर : अध्याय-९१, श्लोक-२९
सर्वमंगल स्तोत्र : मंत्र-७९२

(३) भुज मंदिर
प्रतिष्ठा : विक्रम संवत १८७९, वैशाख सुद-५
ई.स. १५-५-१८२३

श्रीमद् सत्संगिजीवन : प्रकरण-३, अध्याय-५४, श्लोक-३
भक्तचिंतामणी : प्रकरण-८९, कडी-१४
श्री घनश्याम लीलामृत सागर : तरंग-७८, कडी-४०
श्रीहरिकृष्ण लीलामृत : अध्याय-८९, श्लोक-३२
श्री स्वामिनारायण विचरण लीलामृज : विश्राम-६५
श्री हरिचरित्रामृत : अध्याय-५१, कडी-११
श्रीहरिलीला सिंधु : रत्न-१३, तरंग-१४
पुरुषोत्तम प्रकाश : प्रकार-३३, कडी-८
श्रीहरिचरित्रामृत सागर : पुर-२५, तरंग-६३, कडी-४०
श्रीहरि लीला सुधाकर : अध्याय-९१, श्लोक-१९
सर्वमंगल स्तोत्र : मंत्र-७९८

(४) वडताल मंदिर

प्रतिष्ठा : विक्रम संवत १८८१, कार्तिक सुद-१२
ई.स. २-११-१८२४

श्रीमद् सत्संगिजीवन : प्रकरण-४, अध्याय-४७, श्लोक-४५
श्रीमद् सत्संगिभूषण : अंश-३, अध्याय-५७, श्लोक-७
भक्तचिंतामणी : प्रकरण-९०, कडी-१७
श्री घनश्याम लीलामृत सागर : तरंग-८०, कडी-५
श्रीहरिकृष्ण लीलामृत : अध्याय-९४, श्लोक-५०-२४
श्री स्वामिनारायण विचरण लीलामृज : विश्राम-६२
श्री हरिचरित्रामृत : अध्याय-५१, कडी-४०
श्रीहरिलीला सिंधु : रत्न-१३, तरंग-२५
पुरुषोत्तम प्रकाश : प्रकार-२५, कडी-१०
श्रीहरिचरित्रामृत सागर : पुर-२६, तरंग-३५, कडी-२८
श्रीहरि लीला सुधाकर : अध्याय-९२, श्लोक-३३
सर्वमंगल स्तोत्र : मंत्र-८०२

(५) जेतलपुर मंदिर

प्रतिष्ठा : विक्रम संवत १८८२, फाल्गुन वद-८
ई.स. ३१-३-१८२६

श्रीमद् सत्संगिजीवन : प्रकरण-४, अध्याय-८०, श्लोक-५
श्रीमद् सत्संगिभूषण : अंश-४, अध्याय-४२, श्लोक-३४
वचनामृत : जेतलपुर-२
श्री घनश्याम लीलामृत सागर : तरंग-८०, कडी-३३
श्रीहरिकृष्ण लीलामृत : अध्याय-९९, श्लोक-३५
श्री स्वामिनारायण विचरण लीलामृज : विश्राम-१०४
श्री हरिचरित्रामृत : अध्याय-६२, कडी-१७-१८
श्रीहरिलीला सिंधु : रत्न-१४, तरंग-४३
सर्वमंगल स्तोत्र : मंत्र-८०४

(६) धोलका मंदिर

प्रतिष्ठा : विक्रम संवत १८८३, वैशाख वद-५
ई.स. १६-५-१८२७

श्रीमद् सत्संगिजीवन : प्रकरण-४, अध्याय-४, श्लोक-८७
श्रीमद् सत्संगिभूषण : अंश-३, अध्याय-५७, श्लोक-२०
श्री घनश्याम लीलामृत सागर : तरंग-८०, कडी-२२
श्रीहरिकृष्ण लीलामृत : अध्याय-९४, श्लोक-४३
श्री स्वामिनारायण विचरण लीलामृज : विश्राम-९१
श्री हरिचरित्रामृत : अध्याय-५९, कडी-१९-२०
श्रीहरिलीला सिंधु : रत्न-१४, तरंग-४३
पुरुषोत्तम प्रकाश : प्रकार-३३, कडी-९
सर्वमंगल स्तोत्र : मंत्र-८०४

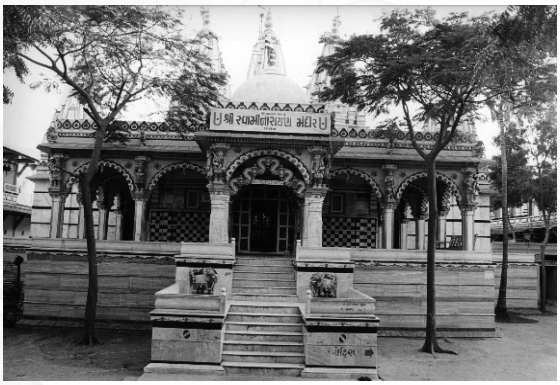

(७) धोलेरा मंदिर
प्रतिष्ठा : विक्रम संवत १८८२, वैशाख सुद-१३
ई.स. २०-५-१८२६

श्रीमद् सत्संगिजीवन : प्रकरण-४, अध्याय-८०, श्लोक-६६
श्रीमद् सत्संगिभूषण : अंश-४, अध्याय-४२, श्लोक-६१
भक्तचिंतामणी : प्रकरण-९७, कडी-४७
श्री घनश्याम लीलामृत सागर : तरंग-८४, कडी-२९
श्रीहरिकृष्ण लीलामृत : अध्याय-९९, श्लोक-४८
श्री स्वामिनारायण विचरण लीलामृज : विश्राम-७२
श्री हरिचरित्रामृत : अध्याय-५९, कडी-१८
श्रीहरिलीला सिंधु : रत्न-१४, तरंग-४३
पुरुषोत्तम प्रकाश : प्रकार-३५, कडी-११-१२
सर्वमंगल स्तोत्र : मंत्र-८७९

(८) जुनागढ मंदिर
प्रतिष्ठा : विक्रम संवत १८८४, वैशाख वद-२
ई.स. १-५-१८२८

श्रीमद् सत्संगिजीवन : प्रकरण-५, अध्याय-१८, श्लोक-१०
भक्तचिंतामणी : प्रकरण-१००, कडी-५९
श्री घनश्याम लीलामृत सागर : तरंग-८४, कडी-३७
श्रीहरिकृष्ण लीलामृत : अध्याय-१०१, श्लोक-२९
श्री स्वामिनारायण विचरण लीलामृज : विश्राम-९९
श्री हरिचरित्रामृत : अध्याय-५९, कडी-२१
श्रीहरिलीला सिंधु : रत्न-१४, तरंग-२२
पुरुषोत्तम प्रकाश : प्रकार-३२, कडी-२
सर्वमंगल स्तोत्र : मंत्र-९५४

(९) गढपुर मंदिर
प्रतिष्ठा : विक्रम संवत १८८५, आसो सुद-११
ई.स. २०-१०-१८२८

श्रीमद् सत्संगिजीवन : प्रकरण-५, अध्याय-५५, श्लोक-११
श्रीमद् सत्संगिभूषण : अंश-५, अध्याय-१८, श्लोक-२३
भक्तचिंतामणी : प्रकरण-१००, कडी-६२
श्री घनश्याम लीलामृत सागर : तरंग-८४, कडी-४४
श्रीहरिकृष्ण लीलामृत : अध्याय-१०१, श्लोक-४५
श्री स्वामिनारायण विचरण लीलामृज : विश्राम-१०६
श्री हरिचरित्रामृत : अध्याय-५९, कडी-३१
श्रीहरिलीला सिंधु : रत्न-१४, तरंग-२२
पुरुषोत्तम प्रकाश : प्रकार-३०, कडी-७
श्रीहरि लीला सुधाकर : अध्याय-९४, श्लोक-१३
सर्वमंगल स्तोत्र : मंत्र-९५८

मंद मंद हँसते श्रीहरि का दर्शन

- शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी (अमदावाद)

श्रीहरि प्रार्थनाष्टपदी राग ठुमंरी - अखंडानंद वर्णी विरचित वदनं दर्शय मंदहसनं भक्तप्रिय ते हरे जनरंजनम् ॥ वदनं.... ध्रुवपदं॥
कुंकुमभालं अधरप्रवालं मदनगर्वोच्चयखंडनम् ॥१॥
तनुसितदंतं वरतरकान्तं मधुरहासश्रीमोहनम् ॥ वदनं...२॥
त्रासितकालं भूकुटिकरालं शशिरविव्योमविवासनम् ॥ वदनं...३॥
सुंदरनासं सौरभवासं नयनचारुतमभूषणम् ॥ वदनं...४॥
मोहितमारं समुदितसारं निगमागमखगनीडम् ॥ वदनं...५॥
कुंडलभासं केसरश्वासं वचनामृतैर्जननंदनम् ॥ वदनं...६॥
चंचलनेत्रं कारुण्यक्षेत्रं विकचिताब्जभातिमोषणम् ॥ वदनं...७॥
पुंड्रितभालं तारितबालं जनहितपीयूषवर्षणम् ॥ वदनं...८॥

ठुमरी अखंडानन्द वर्णी विरचित भगवान श्री स्वामिनारायण मंद हास्य युक्त मुखारविंद का दर्शन जैसे अखण्डानंद वर्णी को हुआ । वैसा ही सभी भक्तो को हो उसका सुख अलौकिक होता है । उसमें कैसा आनन्द प्राप्त होता है । उसकी जानकारी पाने एवम् आनंद प्राप्त करने को उपाय स्वरुप इस अष्टक की रचना किये थे । जिसको गाने-सुनने वाले को सुख आनंद मिले ।

कुंकुमभालं अधरप्रवालं मदनगर्वोच्चयखंडनम् ॥१॥

हे श्रीहरि आप को अपने एकान्तिक निष्कामी भक्त प्रिय और स्पर्शी है । हे परमेश्वर ऐसे आप के भक्तो के उपर आप की सुंदर मंद-मंद मुस्कान युक्त मुखारविंद के दर्शन मे आनंद प्राप्त होता है । इस लिये अपने भक्तो को आनंद देने के लिए आप के सुंदर विशाल भाल पर कुंकुम का चांदला और केसर युक्त तिलक शोभा दे रहा है । ऐसा दर्शन दे । नव कोपल जैसे अधरोष्ट सुंदर दिखाई दे रहे है जो साक्षात् कामदेव के घमंड को जड़ से नाश करने वाला है । हे श्रीहरि आप अपने मंद मुस्कान युक्त मुखारविंद का दर्शन दे । (१)

तनुसितदंतं वरतरकान्तं मधुरहासश्रीमोहनम् ॥ वदनं...२॥

इस लोक में मनुष्य शरीर धारण किये है । वह श्वेत और शांत है । आप के मुखारविंद में दाँत की पक्तियाँ अनार के दाने समाने क्रमबद्ध है । और चमकदार है । इसकी कांति देखकर मन मोहित हो जाता है । ऐसी कांतियुक्त मुस्कान कर रहे है । साक्षात् श्री लक्ष्मीजी को मोहित कर रही है । ऐसे श्रीहरि आप अपनी मंद हास्य युक्त मुखारविंद का दर्शन दे । (२)

त्रासितकालं भूकुटिकरालं शशिरविव्योमविवासनम् ॥ वदनं...३॥

काल, माया और यम जिसके दर्शन से काँपते है । अर्थात् जिसे आप का दर्शन मिल जाये उससे काल भी दूर भागता है । आप के देखने मात्र से अनंतकोटि ब्रह्मांडो की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय होती है । आप के आज्ञा में रहकर आकाश में स्थिति सूर्य और चन्द्रमा को प्रकाश

पेईज नं. १९

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के मुख से अमृत वचन

संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

जेतलपुर मंदिर के १९३ वे पाटोत्सव अवसर पर ता. २८-३-२०१९ : देव का अभिषेक किया गया देव का दर्शन किये और सत्संगी की भीड..... वास्तव में भीड का आनंद है। महाराज बोले कि सत्संग की भीड में रहना ही आनंद है। कुछ समय पहले एक हरि भक्त आये थे, बोले मंदिर में बहुत भीड है। कोई व्यवस्था नही है। हम बोले, महाराज, का आदेश है कि सत्संग की भीड में रहे। भगवान का दर्शन तो होता ही है साथ ही साथ भीड की तकलीफ क्या है? हम भीड का दर्शन करने जाते है कि देव के दर्शन हेतु जाते है। भगवान का दर्शन हुआ, एक झलक मिल जाय तो अधिक है। आप तो देखते है कि अहमदाबाद मंदिर में बड़े अवसर पर कई बहने खम्भे के उपर चढकर नरनारायणदेव का दर्शन करते है। ऐसा दिन तो अपने नही देख रहे है। वास्तविकता यह है कि सत्संग की भीड जिनती होंगी उतने ही काम आयेगी। जगत की भीड अंत में काम नही आती है। इस बात का हम सबको ज्ञान है।

जेतलपुर मंदिर में पार्किंग की तकलीफ है। वैसे अहमदाबाद के मंदिर में भी कष्ट है। ये समस्या हम सब की है। फिर भी इसका भी एक आनंद है। आप सोचे छपैया दर्शन करने गये है। मंदिर के पास हवाई अड्डा हो जहाज से उतरे दर्शन करते जहाज में फिर बैठ जाये दर्शन का आनंद प्राप्त होगा ? दर्शन याद रहे ? कमर टेडी हो जाय। प्रात: निकलकर धीरे-धीरे चलता वाहन रात्रि में पहुंचे वह दर्शन याद रहेगा। यदी अच्छा है। जितनी सुविधा मिली है। मैं यह महाराज की मैं दया मानता हूँ। सि जीव को कही पर संतोष नही मिलता है। हम और आप हाश ! करके बैठे है। मान ले पूर्णिमा के दिन पैदल चलकर आप जेतलपुर आये। दर्शन करके हाश करके बैठते है न ? दर्शन करने के बाद दूसरा तनाव घर वापस कैसे जायेगे ? उसका क्या करेगे ? जिस के जीवन में संतोष आवस्यक है। हाश करके चिंता नही करना चाहिए। यह एक मंत्र है। लेकिन हाश कब बोलते है यह बड़ा प्रश्न है। ऐसे देव मिले है। भगवान मिले है इससे बड़ा हाश क्या हो सकता है। पाटोत्सव, पूर्णिमा, एकादशी की अन्य उत्सव के समय हमारे मंदिर में जगह छोटी पड जाती है। क्या करेगे ? बोले क्या करेगे ? भगवान का दर्शन हो जाये संतो का दर्शन मिले। ऐसी भीड मिले अच्छा है। पूर्णिमा को भक्तो की भीड देखे है। विना जमीन पर पैर रखे आगे निकल जाते है। हमने भी देखा है ? चलकर दर्शन हेतु आने पर मसाज की आवश्यकता ही नही पडती है। लेकिन ये देव है। एक झलक अच्छी है। यह झलक कैसी होनी चाहिए। ये झलक अंतर में उतर जाना चाहिए। दर्शन करते ही जिसके हृदय में महाराज आ जाये, दर्शन जीव में आ जाये तो ऐसे भक्तो का नाम इतिहास और शास्त्रो में लिखा जाता है। दर्शन की प्रसंशा होनी चाहिए, देव का दर्शन कितने समय तक करते है यह महत्वपूर्ण नही है। दर्शन कैसे किये ये महत्व पूर्ण है। पूरी भर कर थाली तो कई लोग खाते है उसे पचाना महत्व की बात है। भोजन के बाद पाचक गोली खाना पडे तो उसे पचना नही कहते है।

कई लोग खाने के अधिक शौकीन होते है। अभी एक रेस्टोरेन्ट के पास में लाइन में खडे लोगो को देखा। यातायात के नियमानुसार मैं रात्रि में घर से बाहर कम निलकता हूँ। इसी बीच किसी काम से बाहर निकलना हुआ। तो वापस लौटे तो उसी तरह लाईन लगी थी। पहले ऐसी लाईन मिट्टी के तेल हेतु लगती थी। गाँव में जो रहते है उनका अनुभव अधिक होता है। मैंने पूछा किसकी लाईन है ? तो ज्ञात हुआ कि उस रेस्टोरेट में भोजन

करने की लाईन है। दो घंटे लाईन में खडे होने से अच्छा है कि घर जाकर सरल-स्वच्छ खिचडी बनाकर खा सकते है। लेकिन नही जीव का स्वभाव है कि दो दिन का वासी भोजन गरम करके होटल वाला देता है और हम खा लेते है। बाद में पाचन की गोली खानी पडती है। मंदिर में भीड से तकलीफ हो तो इतना अवश्य याद रखे कि देव के समक्ष कष्ट सहकर दर्शन करना यह जन्म-मरण के उपर रोक लगाने जैसा है। मंदिर में सुविधा बढ़े अच्छा है इसका हमें विरोधनही है मैं इसका पक्षधर हूँ। कहने का अर्थ है कि स्वयं को जाना हो तो तकलीफ नही होती है। मान ले कि घर पर भीड हो जाने पर पट्टे की चारपाई भी नही मिलती है। दो लकडी की सेटिंग करके सो जाते है और नींद भी आ जाती है। क्योकि वह अपना होता है। इसलिये तकलीफ नही होती है। इसी प्रकार यह मंदिर भगवान का है उतना आप का भी है। उतना ही संतो का है इस लिये ये आपका घर है। ऐसा भाव रखकर दर्शन करेगे तो तकलीफ नही होगी।

तीर्थयात्रा पर मुझे विश्वास नही है अडसढ तीर्थ चरण में, कोटी गया काशी..... सारे तीर्थ यही पर है। फिर भी कोई तीर्थाटन ले जाता है तो आप सबको उसका अनुभव होगा। पार्किंग की कोई जगह नही होती है। यहाँ से टिकट लेकर फिर आगे जाये। मर्यादा के लिये कोई रेखा नही है। दर्शन करते ही परदा गिर जाता है। दर्शन करते समय जरा धक्का लगे तो झगडा कर लेते है। ऐसी समस्या अपने मंदिर में नही है। इसके बाद भी शिकायत आती है, कि स्वामी आज दो मिनट पहले आरती कर दिये है। चंदन का वाधा होने के कारण २-५ मिनट आरती देर से भी हो सकती है। देव की सेवा है। देव को प्रत्यक्ष जाना है तो उनके सामने परदा तो नही है। इनता तो गुण अवश्य ले। बाहर धक्का खाकर आते है। इस लिये कही जाना नही है। सब कुछ यही पर है। इस वाडी में अक्षर महल में हनुमानजी है। महादेवजी है। हम लोगो को नरनारायणदेव मिले है। रेवती बेलदेवजी महाराज मिले है। फिर क्या चाहिए ? इस लिये अपनापन रखे।

यह गंगा माँ का घर अधिक अच्छा लगा। गंगा माँ के घर में बरामदा नही है। मकान है। महल है। वहाँ पर साक्षात् भगवान निवास किये थे। ये तीर्थ स्थान है। इस प्रांगण का माहौल अलौकिक और दिव्य है। ताखे में दिया अभी भी जलाया जाता है। अंधेरा दूर करने के लिये ये दीपक प्रतीक रुप में है। तलवार लेकर धुमे अंधेरा नही समाप्त होगा। एक दीपक जलाने से अंधेरा दूर हो जाता है। दीपक प्रकाश का प्रतीक है। शास्त्र कहता है कि अज्ञान रुपी अंधकार को दूर करने के लिये ज्ञान रुपी दीपक होना चाहिए। पुनराव्रतित करने की आवश्यकता होती है। गाँव का घर यथावत रखे। दिपावली में उसे खोलना होता है। पुरा मकान तोडकर नया तीन मंजिला घर नही बनायें। पुराने घर के बारमदे कमरे, नलिया, चारपाई पर सोने का आनंद ही कुछ और है। वहाँ जो ठंडक लगती है ए.सी. भी वैसा काम नही करे। बाप-दादा के समय का पंखा आवाज करता होगा। आप को यह दृश्य दिखता होगा। कहने का अर्थ यह है कि अच्छा काम हुआ है। विशेषकर ब्राह्मणोने अपने घर के सामान हरिभक्तो के दर्शन हेतु पुसाकार में दिये है। उनको अधिक धन्यवाद संत मागे, भूदेव माँगे, हमने आप से कभी कुछ माँगा ? हमारे लोग सुखी हो ऐसा माँगा। भूदेव जैसा धनी कोई नही है। एक गाँव में एक गरीब ब्राह्मण रहते थे। यह दंत कथा गलत है। जिसके पास भगवान हो वह ब्राह्मण है। जिसके पास भगवान हो वह गरीब कैसे हो सकता है। मन से गरीब हो अलग बात है। मन से अरब पति-करोडपति भी गरीब है। बैंक बैलेन्स में एक के बाद कई शून्य हो लेकिन अच्छा कार्य न करे। तो वह गरीब की परिभाषा सत्य कर रहा है।

गाँव में सभी होती है। आयियेगा। सभा चालु रखकर कुछ नही तो प्रन्द्रह मिनट के लिये आने को प्रेरित करे। क्योकि कथा और सत्संग के अलावा अच्छे गुण आते ही नही है। ये महाराज के वचन है। शास्त्र बंधरखरकर भगवान की महिमा का ज्ञान कैसे हो सकता है ? पढने की आदत किसे है। (बडे भक्त ने हाथ उपर किया। आप तो बड़े है पढेगे ही। मुझे काले बाल वालो से जानना है। पुस्तक कौन पढे। वह मोबाईल देखते है। शास्त्र पढे पढने की आदत न हो तो सुनना चाहिए। महाराज कहे है कि शिक्षापत्री का पाठ करे। न करे तो पढ़ाकर सुने, दर्शन करके निकल ही न जाये, विचार कर आँचरण में अवश्य लाये। आजकल भगवान की कथा भी अप्राप्य होने लगी है। कैसे ? भगवान की कथा नाम मात्र गांव की कथा होने लगती है। जिस कथा में भगवान तथा उनके अवतारी के चरित्र का वर्णन गुण, एव, ऐश्वर्य की कथा होती है। यह सच्ची कथा है। ऐसे शास्त्र को सत्य शास्त्र कहते है। ग्रामवार्ता तो गाँव के चौपाल में भी बैठकर करते है। इस

कथा से कौन दूर रह सका है । राम कथा राम की तरफ ले जाती है । और राम कथा ग्राम कथा की तरफ से जाती है । किस दिशा में हमें जाना है वह निश्चय स्वंय करना है । भगवान के कथा का आग्रह रखे, याद रखे विना जीव आगे नही बढता है।

यह लिपाई अच्छे लगी । दीपक अच्छा लगा प्राचीन महल अच्छा लगा । भविष्य की पीढी वाले बच्चो को प्राचीन घर लाकर दिखाना पडेगा । बच्चे-बच्चियो में इतिहास और संस्कार जीवित रखना है । जिस मानव का संस्कार सजीवित है । वही सब से धनवान है । सब कुछ इसी में आ गया । सबको हम देख रहे है । जो कुछ हो रहा है देव के लिये है । या मेरे लिये है । भले यह गद्दी रखी है । उस पर हम बैठे हो लेकिन केन्द्र बिनदु क्या है ? इन्स्ट्राग्राम में एक संकेत आता है । यह बात इस लिये कर रहे है कि जो भगवान को अच्छा लगे वह कार्य मनुष्य स्वंय करने लगा है । हमारा अस्तित्व भगवान के कारण से है यह बात मानेगे तो आगे बढेगे । भगवान ने जो आज्ञा दिये है उसी में सुख है । घर के चौखाट से नही निकले तो अपनी मर्यादा बनी रहती है । चौखट मर्यादा का प्रतीक है । हमारे गले में कंठी भी प्रतीक है । गृहस्थ, गृहस्थ के मर्यादा में अच्छा लगता है । त्यागी त्याग की मर्यादा में अच्छा लगता है । ऐसे हम आप जैसा करे तो आप के साथ नीचे आ जाये । मैं तो नीचे भी बैठ सकता हूं । आप के साथ बात भी कर सकता हूं । आर्शीवचन का भाषण नही कर सकता हूँ । जो जिसका कार्य उसी को शोभित करता है । भगवान के आज्ञा में रह कर करे तो शोभा देगा । नही तो बेकार है । सब देव के सामने रखना है यह संस्कार बच्चे-बच्चियों में देना है । मुझे न बताओ चलेगा । (बुद्धिशाली को एक बात से बड़े लोगो की महानता का पता चल जाता है । देव स्थायी है । यु.के. ब्रिटिश कान्सुलेट जनरल कालुपुर मंदिर के लेख हेतु ९९ वर्ष के लिए जमिन देना चाहते थे । तब महाराज बोले सोरी हमे जमीन नही चाहिए । हमें स्थायी लेख वाला कागज चाहिए । ये बात इतिहास रुप में है । उसमें गहरी सोच थी । सरकार बदले लेकिन देव का स्थान स्थायी होना चाहिए । यहाँ के अधिकारी के पास पूरी सत्ता नही थी पूरा कागज लंदन गया था । वहाँ से रानी के सही-सिक्के के साथ वापस आया था । इसके बाद मंदिर बना था । उस मंदिर में आज भी नरनारायणदेव बिराजमान है । सब बदला (सभा) मंडप की दिवार पर) हमारे पीढ़ीयो की पंक्ति (आचार्य परम्परा) वह भी बदली । मात्र एक है । (सिंहासन में रहे देव - जीवन में हमे उन्हे उतारना है । नाटक में नही पडता है । देव को आगे रखना है । प्रधानता देना है । इन से आगे कोई नही है । ये सनातन सत्य है । सत्य कह रहा हूँ । उपदेश नही दे रहा हूँ । आप देव की महिमा जानते है । इसी के कारण कुर्सी में बैठने की आदत के बात जमीन पर बैठे हे । यह एक तप हे यथार्थ है । यह पवित्र भूमि है । यहां देव के सानिध्य में बैठकर भगवान की महिमा का ज्ञान भगवान के चरित्र को सुनना उससे अधिक पुण्य नही है।

गर्मी तो है । कई लोग तीर्थाटन के लिये योजना बना लेते है । कहने के लिये तीर्थाटन है । भगवान का धाम होता है । बड़ा धाम हो, शांति से किसी दिन बैठे है ? सामान्य दिनो में शांति से धाम में बैठने का अवसर कभी मिलता है कि नही ? मुझे तो नही मिला है । यहाँ कभी भी पूरे दिन देव के सामने बैठे । कोई हटाये तो जरुर कहियेगा । महाराजने हम लोगो की ऐसी सुविधा दिये है । महाराज मंदिर को **Competition** के लिये नही बना है । आज तो एक मंदिर है उसी के बंगल में दूसरा मंदिर बना लेते है । भगवान को शांति से रहने दे । पडोशी को शांति से न रहने दे थे । अलग बात है । भगवान को पडोशी मनाते है । भगवान मंदिर भजन-भक्ति के लिये बनाये है । उप अर्थात् नजदीक आसना अर्थात रहना होता है । उपासना हेतु महाराज मंदिर बनवाये है । सुने कि नही ? इतना सुख साधन कही नही मिलता है । हार पहनने को न मिले तो चिंता मत करना । सिंहासन वाले हार पहनायेगे । आप सेवा दिये है अर्थात् हार पहने है । हमें अपना भगवान के खाते में नाम लिखवाना है देव का होकर रहे यही सलाह है । दूसरा अधिक हुआ । काका हुए, मामा हुए, भतीजा हुआ, दादा हुए और होना है । कम पड रहा है तो ईश्वर का होकर रहे । मंदिर में १२-१३ सीढ़ीयाँ है । देव के लिये इतना करना है । यजमान ठक्कर परिवार तथा पी.पी. स्वामी आदि संतो, भक्तो ने खूब धन्यवाद दिये थे । प.पू. महाराजश्री अंत में बताये ऐसा **Concept** (गंगा में के घर के आइडिया की सोच) मुझे भी थी और रहेगी । लोगो को दूसेर काम में संतोष नही है । ऐसा मुझे नही है । गंगामां को राहत मिले इससे अधिक आयोजन करे । इसके लिये बलदेवजी दादा सर्वाधिक अमी दृष्टि करे एसी नरनारायणदेव के चरणो की प्रार्थना करते है।

पूज्य महाराजश्री का कल्याणकारी संकल्प

– साधु देवस्वरुपदास (माणसा महंत)

संवत १९२६ वैशाख सुद-६ शुक्रवार के दिन महाप्रतापी प्रसादी के श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज माणसा नगर पधारे (प्रतिष्ठा हुई) तब आचार्य पद पर द्वितीय आचार्य महाराजश्री केशवप्रसादजी महाराजश्री तथा साथ में आदि संत आये थे । भगवान के आगमन से तथा पुण्य प्रताप से माणसा के सभी हरिभक्तो सुखी और सम्पन्न हुए । भाविक भक्तो तथा संतो से सेवा प्राप्त भगवान की महिमा सबके हृदय में बढती गई । माणसा और उसके आस-पास ३० कि.मी. के गाँवो के आराध्य देव बन गये । माणसा तथा उसके आसपास के गाँव भगवान श्रीहरि को खूब प्रिय थे । इस कारण से श्रीहरि बार-बार यहाँ आते थे । जो श्रीहरि को प्रिय हो उनके पुत्र प.पू. आचार्य महाराजश्री को भी प्रिय होगा । इस कारम श्रीहरि के समान पूज्य आचार्य महाराजश्री गाँवो का अधिक भ्रमण करते है ।

कई वर्षो के प्रयास के बाद माणसा तथा उसके आस-पास गाँव के भाविक भक्तो के लिये प.पू. आचार्य महाराजश्रीने सुखदायक निर्णय लिये । और श्री नरनारायणदेव मंदिर कालुपुर से विशाल रमणीय जमीन-माणसा-गांधीगनर हाईवे उपर लिये । ता. ५-११-२०१८ धनतरेस के दिन प.पू. आचार्य महाराजश्री के शुभ हाथो द्वारा भूमिपूजन और खादमुहूर्त किया गया । अभी मंदिर का निर्माण कार्य चालु ही था कि ता. १४-१-२०१९ मकरसंक्राति के दिन प्रातः महाप्रतापी श्री राधाकृष्णदेव श्रीहरिकृष्ण महाराज तथा बालस्वरुप श्री घनश्याम महाराज पवित्र स्थल पर बिराजमान हो गये । प.पू. आचार्य महाराजश्री के निर्देशानुसार तथा उनकी शुभ उपस्थिति में भगवान के स्वरुपो का चलन विधिपूर्ण की गयी ।

वर्तमान समय की आवश्यकताओ को ध्यान में रखकर प.पू. आचार्य महाराजश्रीने खुद मंदिर की सम्पूर्ण

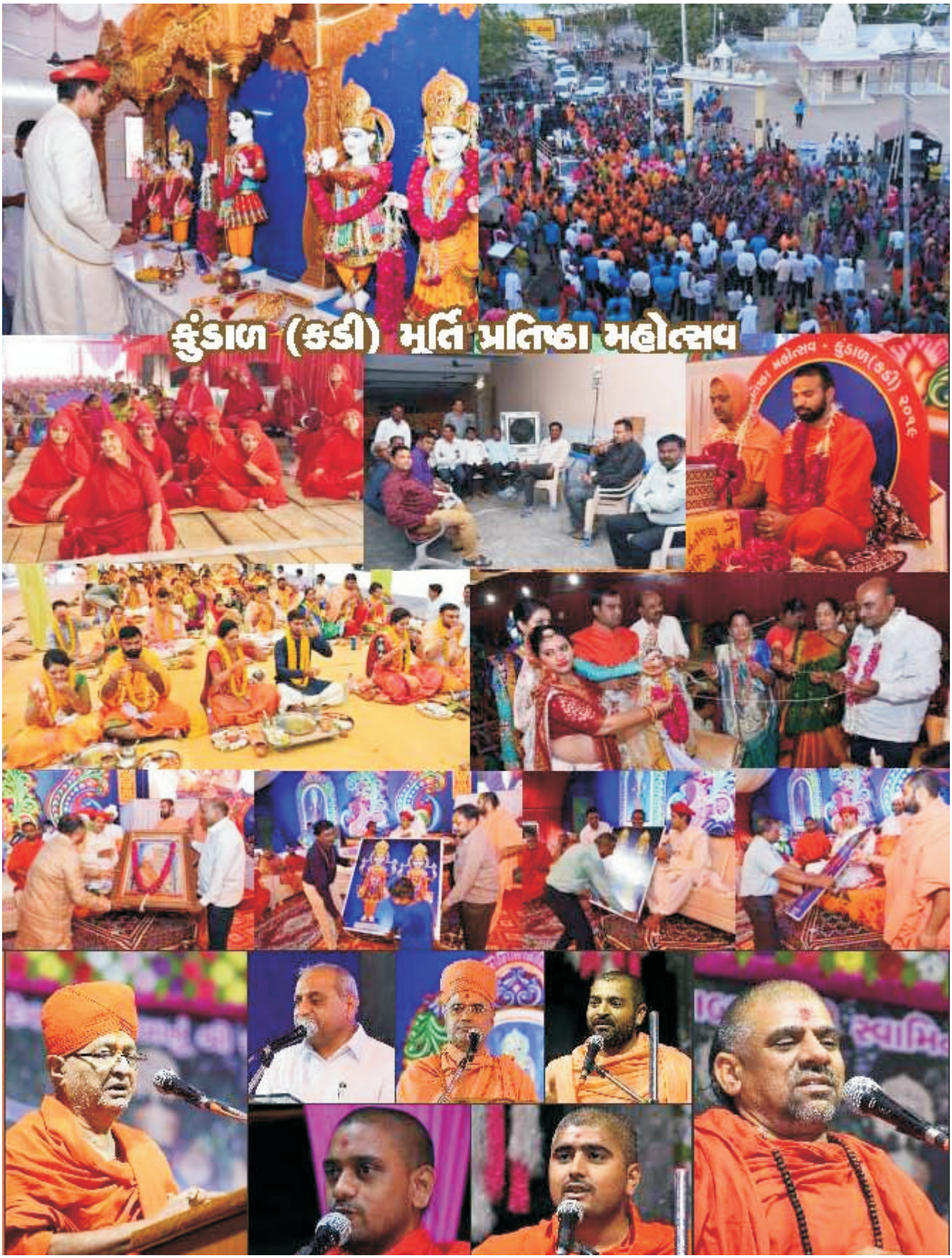
કુંડાળ (કડી) મૂર્તિ પ્રતિષ્ઠા મહોત્સવ

બાયલ (અરવલ્લી) મૂર્તિ પ્રતિષ્ઠા મહોત્સવ

હિમ્મતપુરા (લાકરોડા) મૂર્તિ પ્રતિષ્ઠા મહોત્સવ

મીઠાખળી (અમદાવાદ) મૂર્તિ પ્રતિષ્ઠા મહોત્સવ

મેમનગર મંદિરમાં ૨૦મો પાટોત્સવ

કુંડાસણ કથા પારાયણ

ન્યૂ રાણીપ શ્રી હનુમાનજી મૂર્તિ પ્રતિષ્ઠા મહોત્સવ

प्लानिंग किये थे। कार्य शीध्रता से पूर्ण हो कालुपुर मंदिर से फंड दिया गया था। तथा प्रतापी देवो के उपस्थिति में तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री के सतत देखभाल में एवम् निर्देशानुसार मंदिर का कार्य पूर्ण हुआ। मात्र ४ महिने जिस दिन १४९ वर्ष पहले महाप्रतापी देव माणसा नगर में आये थे। उस दिन वैशाख सुद-६ ता. १०-५-२०१९ के दिन नये मंदिर में देव विराजमान हुए। और प.पू. आचार्य महाराजश्री पूर्ण भाव से ठाकुरजी का षोडसोपचार अभिषेक करके आरती किये थे। तत्पश्चात प्रसंगोचीत सभा में अधिक संख्या में उपस्थित हरिभक्तो को आशीर्वाद दिये। इस ऐतिहासिक अवसर पर प.पू. लक्ष्मीस्वरुपा अ.सौ. गादीवालाश्री और भावि आचार्यश्री प.पू. लालजी महाराजश्री भी आये थे। आगामी १५० वर्ष के उत्सव की घोषणा विधिवत बताई गयी।

माणसा का नया मंदिर सम्प्रदाय के लिये सिम्बोलिक होगा। कम खर्च और कम समय में और सभी सुविधा युक्त पाँच शिखर का नये मंदिर का निर्माण रिकार्ड समय में पूर्ण हुआ। जो एक इतिहास है. इस नये मंदिर का सम्पूर्ण सफल प्रोजेक्ट प.पू. आचार्य महाराजश्री ने साकार किया था। श्रीहरि के अपररुप ऐसे धर्मवंशी आचार्यश्री की सामर्थ्य भगवान जैसी है क्योकि ये भगवान के ही पुत्र है।

(अनु. पेईज नं. १० से आगे)

मिलता है। जो जगत को प्रकाश देकर सुखी करते है। ऐसे श्रीहरि आप अपने मंद युक्त हास मुखारविंद का दर्शन दे। (३)

सुंदरनासं सौरभवासं नयनचारुतमभूषणम् ॥ वदनं...४॥

जिनके मुखारविंद में तिल के पुष्प समान सुंदर नासिका है। जो मनपसंद सुगन्धित पुष्पो को सुंघते रहते है। दर्शन करने वाले भक्त को अच्छा लगे ऐसे सुंदर सौम्य शीतल श्वेत वस्त्र और आभूषण धारण किये है। ऐसे श्रीहरि आप की मंद युक्त हास्य वाले मुखारविंद का दर्शन दे।(४)

मोहितमारं समुदितसारं निगमागमखगनीडम् ॥ वदनं...५॥

जगत के जीव मात्र को मोह-माया मे साने वाले काम को भी मोह पैदा करते है। ऐसा आप का मुखारविंद है। सभी सत्य शास्त्रो का सार रुप ऐसे आप के स्वरुप का ज्ञान प्राप्त करने के लिये वेद, शास्त्रो, सत्यपुराणो और स्मृतिओ के गहरे-गहरे ज्ञान देते है। उनके लिये आप का मुखारविंद उनके लिए पक्षी को जैसे उसका घोषला प्राप्त हो जाता है। ऐसे मंद मुस्कान युक्त मुखारविंद का श्रीहरि दर्शन दे।(५)

कुंडलभासं केसरश्वासं वचनामृतैर्जननंदनम् ॥ वदनं...६॥

जिनके दोनो कानो में चमकते हीरा-मोती से जडित सुंदर कुंडल शोभा बढा रहे है। और श्वासोश्वास की क्रिया से केसर के समान सुंदर जीभ का दर्शन मन को मोह लेता है। आप के मुककमल से निकले वचनामृत को सुनने वाले जन मसुदाय और आप के एकान्तिक भक्तो के हृदय में आनंद पैदा करते है। ऐसे श्रीहरि आप अपने मंद मुस्कान युक्त मुखारविंद का दर्शन दे।(६)

चंचलनेत्रं कारुण्यक्षेत्रं विकचिताब्जभातिमोषणम् ॥ वदनं...७॥

हे श्रीहरि आप अपने भक्तो को अधिक चंचलता से अपने भक्तो को देखते रहते है। आप उनके उपर सदैव करुणा के सागर समान दया बरसाते रहते है। दया करके आप का मुख पूर्ण विकसित कमल के समान खिल उठता है। ऐसे श्रीहरि आप की मंद मुस्कान युक्त मुखारविंद का दर्शन दे।(७)

पुंड्रितभालं तारितबालं जनहितपीयूषवर्षणम् ॥ वदनं...८॥

जिसके विशाल मस्तक पर सुंदर उर्ध्वपुंड तिलक शोभा देता है और मस्तक पर तिलक, चांदला होता है। ऐसे अपने भक्तो को संसार सागर से तारने वाले है। ऐसे एकान्तिक भक्तो के उपर सदैव करुणामयी अमृत दृष्टि रखते है। ऐसे श्रीहरि श्रीहरि आप की मंद मुस्कान युक्त मुखारविंद का दर्शन दे।(८)

श्री स्वामिनारायण म्युजियम

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से

श्रीजी महाराज अहमदाबाद के निवास समय अहमदाबाद के शेठ श्री हेमचंदभाई के आग्रह से उनके पुत्र के विवाह अवसर पर पोल में आये उसके घर पर संत आये थे । श्रीजी महाराज औस संतो की किस जगह पर बैठने की व्यवस्था की गयी थी । घर के पीछे एक खिडकी थी । शादीवाले घर में बहने आती जाती थी । उस खिडकी पर एक कांटन का पर्दा लगाया था । जिसमें नीचे ग्रामवासी गरबा खेल रहे है । तथा भाग में दोनो तरफ दो हाथी पर अंग्रेज सवार होकर बीच में एक अंग्रेज सैनिक बन्दूक लेकर साथ में चल रहा है । लगभग दो सौ पच्चीस वर्ष के पर्दे का रंग मलिन नही हुआ है । तथा अभी क्रमबद्ध है । गद्दी तकिया पर बिराजमान होकर श्रीजी महाराज ने इस परदे को प्रसाद का अंग बना दिये । यह म्युजियम में हाल नं. ५ में ''हेमचंदभाई के यहाँ विवाह पर श्रीजी महाराज'' अवसर पर रखा था ।

– प्रफुल खरसाणी

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति का अभिषेक कराने वालों की नामावलि मई-२०१९

दि. ०५-०५-२०१९ निकुल महेशभाई पटेल (डांगरवावाला) राणीप

दि. १९-०५-२०१९ श्री स्वामिनारायण सत्संग मंडल - रामबाग कांकरिया

दि. २२-०५-२०१९ निमेष नरेन्द्रभाई माणेक - पालडी, अहमदाबाद

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि-मई-२०१९

रु।. ५,००१/- निर्भय जी. कापडीया - फ्रेन्च भाषा केनेडा की परीक्षा उत्तीर्ण करने पर (हा. घनश्यामभाई कापडिया - अहमदाबाद)

रु।. ५,०००/- अ.नि. काशीभाई गोविंदभाई पटेल - धर्मज - हा. रमेशभाई के. पटेल परिवार

रु।. ५,०००/- नितीन देवशीभाई केराई - मांडवी (कच्छ) वर्मतान लंदन

रु।. ५,०००/- अ.नि. लीना किरीट वाघेला (भालजा मंडल) - मणीनगर प्रथम वार्षिक पुण्यतिथि पर ह. कीरीटभाई वाघेला

रु।. ५,०००/- मीनाबेन के. जोषी - बोपल

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. मोटा महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं ।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला २० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है ।

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

देवडा गाँव की दिव्य कथा

– शास्त्री हरिप्रियदासजी (गांधीनगर)

गाँव का नाम सुनते ही शरीर में सारंगी के तार बजने लगता है। गाँव में घुसते ही मन की बाँसुरी बजने लगती है।

२०७ वर्ष पहले घटित अवसर के संस्मरण हृदय पर दिखने लगता है। तब विचार आया कि भक्तवत्सल भगवान की करुणा तो देखो !!; दया के सागर भगवान की दया तो देखे। अपने भक्त के घर जाकर विशेष रुप से ध्यान देते है।

उत्तर गुजरात के विसनगर के पास वसई डाभला चौक के पास देवडा गाँव है। वहाँ पर हरखशा नाम के वणिक रहते थे। श्रीहरि के दृढ भक्त थे। व्यवहार में कमजोर होने के बाद भगवान के जन के प्रति सुखी रहते थे।

एकबार श्रीहरि देवडा के पास निकले और हरखशा का दर्शन हुआ। और घर आने के लिये आग्रह किये। महाराजने मना कर दिया। काफी आग्रह करने पर महाराजजी बोले आप तो गरीब है आप रोटी-दाल बनाये तो हम आये। ऐसा ही करेगे। हरखशा ऐसा बोले।

महाराज घर पर आये। साथ में तीन-चार पार्षद थे। सभी घोडो को बाँधकर घास डाल दिया गया था। महाराज ने अपना ढोलिया बिछाकर बैठ गये। हरखशा के पत्नी का नाम मोतीबा था। उनका जीवन मोती के तरह था। हरखशा मोतीबा से बोले कि महाराज रोटी-दाल बनाने को कह रहे है। मोतीबा बोली ऐसा नही होता है। अपने ईष्टदेव प्रगट परमात्मा अपने घर आये है। उन्हे ऐसा हलका भोजन कैसे खिलाये। भगवान तो दयालु है। हम जो बनायेगे वह खायेगे। इसलिये जाइये। घर में पैसा नही था। घर पर एक ताँबे का पात्र था। उसको बेचकर आ गये। उसमें से खीर, मालपुआ, शाग, दाल, इत्यादि बनाकर भोजन कराये।

खाते बख्त प्रभुने पूछा कि यह क्या बनाये है ? हमने तो मना किया था। क्यो बनाये ? हरखशा बोले आप की आज्ञा से ही बना है। यह काली रोटी है और दाल सफेद है। भोजन करते-करते महाराज बोले कि हे भक्त। हमको तो ज्ञातथा कि आप गरीब है लेकिन आप तो शेठ है। हमें पाँचसौ रुपये की जरुरत है कृपा हमें दे।

हरखाशा घर में जाकर मोतीबा से पूछो ये तो कठिन बात हो गयी। महाराज पाँच सौ रुपये की माँग किये है। क्या करे ? कहाँ से लाये ? लेकिन मोतीबा किसका नाम है। ऐसा बोले है। इसमें धबराना क्यो ? महाराज माँगे है तो किसी तरह से देना ही है। विवाह के बाद पल्लु में २५० रुपये मिले थे वह व्यापारीर के पास रखा था। मोतीबा वापस ले आई ।उनके घर पह उतने ही पैसे थे। शेष के लिये कुछ कपड़े और बर्तन बेच दिये तथा ५०० रुपया एकत्र किये। महाराज के भोजन के बाद ढोलिया पर ५०० रुपये को रख दिया।

महाराज बोले, ये रुपये लेकर हमारे साथ आओ। महाराज हरखशा को लेकर विसनगर आये थे। पाँचसौ रुपये का अरहर की दाल खरीदे थे। उस समय एक रुपया में चार मन (दाल) मिलती थी। वह दो हजार मन दाल हो गई। महाराज बोले ये दाल अपने घर पर रखो। जब आवश्यकता होगी तो माँगेगे।

आज्ञा पालक हरखशा गाडी में अरहर की दाल घर लाये। यह ८६८ के वर्ष की बात है। १९१३ के वर्ष में वर्षा नही हुी। गुजरात-काठियावाड में अकाल पड गया था। चारो तरफ त्राहिमाम मच गया था। उस समय हरखशा ने महाराज को पत्र लिखा कि महाराज, आप दाल मँगा ले। यहाँ पर चोरी का भय है।

पत्र में उत्तर में गरीबनवाज श्रीहरि लिखते है कि भक्त ये दाल मेरी नही है। आप के लिये खरीदी है। खाओ, बेचो और गरीबो की मदद करो उस समय दाल का भाव आठ रुपये प्रति मन था। स्वयं के प्रयोग हेतु रखकर गरीब-दुखी की मदद कर दिया था। शेष बेच कर हजारो रुपया कमा लिये। फिर भगवान ने बोला ''आप तो साहुकार हो'' सेठ के नाम से प्रसिद्ध हो गये।

मित्रो ! सुदामा के मुठ्ठी भर चावल खाकर सोने का महल दे दिये। प्रभु अपने भक्तो को गरीब, दुःखी रहने देगे ! वास्तव में भरोसा रखना चाहिए।

मित्रो ! जिस घर में इष्टदेव स्वामिनारायण भगवान भोजन लिये हो । बडा घर आजभी गाँव में मौजूद है ।

•

नाम मंत्र का प्रताप

– नारायण वी. जानी (गांधीनगर)

यह महिमा छः अक्षर कि ''स्वामिनारायण'' महामंत्र का है । यह मंत्र अधिक सरल है । फिर भी इतना चमत्कारी है । कि निष्कुलानंद स्वामीजी कहे है कि ''कान में नाम की भनक पडे उसका अक्षर पोल खुल जाता है'' इस मंत्र का क्या चमत्कार है । आज के सत्य घटना पर यह जान सकते है ।

एक गाँव था । सत्संगियो की संख्या कम थी । लेकिन सत्संग अच्छा होता था । अपना मंदिर भी इस गाँव में था । वर्ष में एकाधबार पाँच एक संतो का मंडल इस गाँव में आ गया था । कुछ दिन तक रुके थे । सत्संगि उत्साहपूर्वक कुछ दिनो में ही सुबह-शाम संत समागम करके पूरे वर्ष का लाभ ले लेते थे । इस मंदिर के सामने एक नास्तिक का घर था । भजन-भक्ति की आवाज उसके कान में कठोर ध्वनिने जैसे लगती थी । इस तरह के भजन में उसको लगाव नही था । अपना प्रभाव दिखाने के लिये तंत्र-मंत्र, मैली विद्या मारण उच्चाटन की सिद्धि का था । उसे ऐसा कहा जाता था कि अपनी सिद्धि से हरे वृक्ष को भी सुखा देता था । उडनेवाले पंक्षी को मार देता था । मनुष्य को स्थिर बना देने वाली शक्ति की सिद्धि उसके पास थी । जब मनुष्य को अच्छे गुण से शक्ति नही मिलती है तो वह ऐसे खराब गुणो को प्राप्त करके बड़ा होने का दिखावा करता है । वृक्ष लगाने की वृत्ति न रखकर उसे जला देने वाली वृत्ति की शक्ति से नास्तिक का भाव दिखाता है । संत भक्तो की तरफ से इस मानव को दुख नही देना था । लेकिन यह मति भ्रष्ट संतो का अहित करने का मन बना लिया था । संत लोग नित्य कर्म हेतु गाँव के किनारे जाते थे । इस नास्तिक ने घोर षडयंत्र की योजना बनाया ।

वह मंत्र साधना करके ऐसा उर्द तैयार किया कि उसे जो पार करे इसकी मृत्यु हो जाती थी । ऐसा मंत्र युक्त उर्द रात्रि के बारह बजे मंदिर के दरवाजे पर रख दिया । प्रातः संत उठे । और स्वामिनारायण का नाम लेते मंदिर से निकले । वह नास्तिक भी शीघ्रता से उठ गया । घर के खिडकी से देख रहा था । उसे ऐसा लगता था एकाधलोग गिरकर मर जायेगे । लेकिन लगभग एक घंटे के बाद सभी संत नित्यकर्म-स्नान करके वापस आ गये । प्रकाश होने पर दरवाजे पर संतो ने उर्द देखा । संतोने विचार किया कि कोई भाविक यह रखकर गया है । वे उठाकर मंदिर में ले गये ।

नास्तिक भ्रम में पड गया । यह क्या । इन पर तो कोई असर नही हुआ । बल्कि मेरा उर्द भी ले गये । क्या ये लोग हमशे अधिक मंत्र जानते होगे । उस उर्द का प्रयोग मुझ पर करेगे । इत्यादि सोचने लगा । फिर भी हार नही माना । यह कार्य उसने दो-तीन दिन लगातार किया । लेकिन सफलता नहीं प्राप्त हुई ।

पूरे दिन लगातार संतो का स्मरण, सुबह-शाम दर्शन और काम में 'स्वामिनारायण' महामंत्र की ध्वनि साधु के पास आने के लिये प्रेरित करने लगी । एकबार अनजाना बनकर साधु के पास आया और पूछा ''स्वामीजी'' यहाँ कोई उर्द रख जाता है । उसका क्या करते है ? संत बोले हम लोग स्नान करने जाते है कोई भक्त मंदिर बंद होने के कारण यहाँ पर रख जाता है । बाद में हम लोग उठाकर साफ करके दाल बनाकर प्रभु को भोग लगाकर हम लोग भोजन में ग्रहण कर लेते है । यह सुनते ही वह पसीने-पसीने हो गया । मेरे द्वारा मंत्रित उर्द को कूद जाना, खा जाना फिर भी कुछ न होना । यह निश्चित ही अधिक शक्तिशाली तंत्री जानने वाले है । इसमें संशय नही है ।

बाद में छल छोडकर संतो के पास खुले दिल से अपना दूष्टकृत स्वीकार कर लिया तथा क्षमा याचना भी किया । बापजी ! आप कौन सा मंत्र जानते है कि मेरे मंत्र का असर ही नही हुआ । संत जवाब दिये । हे भाई हम लोग ऐसा महाचमत्कारी मंत्र जानते है । आप अपने हजारो मंत्र प्रयोग करे तब भी हम लोगो को कुछ नही होगा । इस मंत्र से भूत, प्रेत, पिशाच, डाकण कोई भी इस मंत्र का सामना नही कर सकता है । पूरे विश्व में अजेय यमदूत तथा अन्य दूसरी आपत्तियो को इस मंत्र से दूर किया जा सकता है ।

यह मंत्र अति सरल है । इस में कोई शर्त नही है । खाते-पीते, टहलते, काम करते, घुमते जप करे तो भी फल देता है । यह मंत्र प्रेम से सबक देते है । अब तो यह आदमी संत के मुँह से इतनी महिमा सुनकर उसके अन्दर का ज्ञान जग गया । नास्तिकता भी दूर हो गई । तथा पवित्र बन गया ।

मित्रो ! देखे कैसा प्रबल, प्रतापी, ''स्वामिनारायण'' महामंत्र है । स्वामिनारायण भगवान ने दिया है । उसकी महिमा समझकर महामंत्र में निष्ठा रखकर जप करे तो हमें अक्षरधाम समान सत्संग के सुख प्राप्त होगा । और दुःख शोक, कंकाश, लोभ, काम, क्रोधइत्यादि सभी शत्रुओ से बच जायेगे ।

॥ भक्तिसुधा ॥

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से)
बापूनगर एप्रोच सत्संगिजीवन पारायण अवसर पर ता. २४-४-१९ "अपना जीवन इतना 'दिव्य' बनाये के महाराज आप को जाने"
(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

जब से जन्म हुआ वही से मृत्यु की यात्रा प्रारम्भ हो जाती है । जैसे-जैसे एक-एक दिन पसार होता है । प्रत्येक क्षण मृत्यु के समीप जा रहे है । यह यात्रा कब पूरी होगी वह ज्ञात नही है । यात्रा का क्या फल मिलेगा ? वह भी नही ज्ञात है । क्योकि ? कर्म फलदाता परमेश्वर है । यह सत्ता महाराज अपने पास रखे है । इसके बाद भी महाराज के यह सत्ता ५०% अपने पास रखे है । ५०% सत्ता आप को प्रदान किये है । कौन सत्ता ? वह कर्म करने की है । मनुष्य जीवन का मुख्य लक्ष्य है कि इस यात्रा के अंत में परमात्मा के पास जाना, तो उसके लिये जो प्रयत्न करता है । वह पुरुषार्थ जो अपने बस की बात है ।

तो हम जीवन में ऐसा पुरुषार्थ करे की अपनी इस यात्रा के अंत में हमें जिस के पास जाना है उसके लिये अपना जीवन दिव्य बनाये ताकि महाराज हमे पहचान सके । क्योकि ऐसा जीवन होने पर अपना कल्याण हो सकता है । इस संसार में कोई महान व्यक्ति हमे पचानता है तो अपना काम सरलता से हो जाता है । अपने देश के प्रधानमंत्री को सभी लोग पहचानते है कि अपने देश के प्रधान मंत्री है । इनमें क्या बात है ? यह बड़ी बात नही है । स्वाभाविक है । लेकिन अपना कार्य कैसे होगा । जब हमे कोई जानता होगा तब हो सकता है । इसी प्रकार महाराज को सभी लोग पहचानते है । स्वामिनारायण भगवान है । लेकिन महाराज हमे जाने तब 'कल्याण' होगा । महाराज हमें कैसे पहचानेगे ? सम्पूर्ण शरणागति स्वीकार करे तब । इस लिये सम्पूर्ण शरणागति स्वीकार कब करेगे । महाराज के द्वारा बताये नियमो और आज्ञा का पालन करना । हम लोग काफी सुनते है । पूर्व समय में ऋषि-मुनि हजारो वर्ष तक तपस्या करते थे । उसमें से मुक्ति मिले ऐसा कम उदाहरण है । लेकिन कलियुग में महाराज द्वारा बनाये गये । व्रत-नियम है । नियम का पालन करना थोडा कठिन है । १००% शरणागति तथा महाराज के पास जाने की मंशा होगी तो नियम का पालन कोई कठिन कार्य नही है । जीवन भक्त और सगराम वाघरी जैसे भक्त का महाराजने सत्संग में कल्याण किये है ।

श्रीजी महाराजने अपने को इस सत्संग में जन्म देकर या जन्म के बाद सत्संग को अवगत कर के हमको संकेत दे दिये है । अपने धाम में ले जाने का निमंत्रण दे दिये है । तो महाराज को प्राप्त करने के लिये हम कितना समय देते है वह हमें सोचना है । क्योकि ? इस संसार में किसी सामान्य व्यक्ति के घर प्रसंग हो और निमंत्रण दिया हो तो हम लोग उस व्यक्ति के यहाँ उसके अनुसार पहुँच कर भेट देते है । उस व्यक्ति के अनुसार हम हर कार्य के लिये तत्पर रहते है । और प्रत्येक कार्य करते है । सही बात है न । अपना जो कार्य करे उसका कार्य करना चाहिए । कृतध्न नही होना चाहिए । लेकिन इस संसार के भौतिक सम्बन्धो में और पंचभूत की यह शरीर सजाने में व्यस्त रहते है । अपने आत्मा के कल्याण के लिये कुछ कार्य करना चाहिए। यहाँ पर हमे यह सोचना है कि महाराज ने हम लोगो को कितना दिये है । मूल्यवान मनुष्य का जन्म दिये है । तथा सत्संग की पहचान कराये है । इस लिये हम लोग उनसे हर साँस के कर्जदार है । इस लिये उनके लिये दो माला से अधिक समय नही देते है । मात्र भौतिक सुख के लिये दौडता है । इस भौतिक संसार में कोई व्यक्ति निमंत्रण दे तो वहाँ पर भेट लेकर जाते है । जब की महाराज ने जो आमंत्रण दिये है उसके लिये भेट नही ले जाना है . सब कुछ छोडकर यहाँ से वहाँ जाना है । तभी वहाँ पहुँच सकते है । भौतिक जगत के प्रसंग में वापस आने का समय निश्चित है । लौटने की तैयारी से ही जाते है । यहाँ पर अन्तर है ? महाराज ने बड़ा निमंत्रण दिये है । वहाँ जाने के बाद कभी वापस नही आना पडता है ।

महाराज स्थायी रुप से वहाँ रोक लेते है । हमे उसी तरह की तैयारी से जाना है। महाराज निमंत्रण दिये है और मार्ग भी बताये है । नियम भी बनाये है और आज्ञा भी दिये है । जीवन किस प्रकार व्यतीत किया जाये। ताकि दूबारा इस जगत में नही आना पडा । हमे इतना ध्यान रखना है कि महाराजके द्वारा बनाये गये नियमो और आदेशो का पालन करे । इस लिये 'अणिशुद्ध' बने ताकि यात्रा के अंत में वापस नही आना पडे ।

●

स्वामिनारायण भगवान का प्रगटीकरण

– सांख्ययोगी कोकिलाबा (सुरेन्द्रनगर)

स्वामिनारायण सम्प्रदाय में स्वामिनारायण भगवानने प्रगट या प्रत्यक्ष कहा जाता है। स्वामिनारायण भगवान जब इस पृथ्वी पर मनुष्य रुप में विचरते थे । उनसे मिलने वाले अनंत जीवो का कल्याण हो गया । इस पृथ्वी पर के मुमुक्षु जीवात्माओ जैसे कि स्वामिनारायण भगवान के आश्रित हो । इस लिये तीन गूढ संकल्प देव, आचार्य और शास्त्र में हमेशा प्रगट रहने का वचन दिये है । स्वामिनारायण भगवान के राम-कृष्ण आदि अवतारो ने जब पृथ्वी पर अवतरण किये तब-जटायु, वानर आदि पशु-पक्षी गोप-ग्वाल आदि का प्रगट स्वरुप में प्रेम को पाये थे तथा सेवा देकर तर गये थे । प्रगट की उपासना से ही जीव का कल्याण होता है ।

भगवान राम-कृष्ण के अवतार इस पृथ्वी पर प्रगट हुए हजार वर्ष हो गया । लेकिन अपने भक्तो को अंतकाल में दर्शन देकर विमान या रथ में बैठाकर अपने धाम में ले गये हो । ऐसा किसी शास्त्र में पढा नही है । जब कि स्वामिनारायण भगवान इस पृथ्वी पर प्रगट हुए उन्हे २३८ वर्ष पूर्ण हुए । आजतक अपने के हजारो भक्तो को अंतकाल संतो के साथ दर्शन देकर विमान या रथ में बैठाकर अक्षरधाम ले गये है । निष्कुलानंद स्वामी कहते है कि

"मारा जनने अंतकाले मारे जरुर तेडवा आववुं,
बिरुद मारु ए न बदले सर्व जनने सभलाववुं."

वैसे तो स्वामिनारयण भगवान पृथ्वी पर मनुष्य रुप में थे । तब भी अपने दिव्य रुप में भक्तो को अंत समय में छोडने अवश्य आते थे । मोक्ष तो प्रगट प्रभु के आश्रय से है । प्रगट सूर्य से प्रकाश प्राप्त होता है । प्रगट जल से गंदगी दूर होती है । प्यास मिटती है । प्रगट अन्न से भूख मिटती है । प्यास लगे तो शरीर के उपर पानी गिराने से प्यास समाप्त नही होता है । उसके लिये पानी पीना ही पडता है । उसी प्रकार प्रगट का साथ और सहारा मिलने पर परमात्मा सुख प्रदान करते है । साक्षात के विना महत्व नही है । साक्षात् सूर्य विना, लाखो चित्रित सूर्य से प्रकाश नही हो सकता है । स्वप्न में पंचामृत मिले उठने पर भूख वैसी ही रहेगी । प्रगट से ही भूख लगती है । समुद्र को नाव से ही पार कर सकते है । उसी प्रकार प्रगट भगवान ही भवपार कर सकते है । आत्यंतिक कल्याण प्राप्त करना हो तो प्रगट भगवान की प्राप्ति होनी चाहिए ।

साक्षात की महिमा समझने में मुक्तानंद स्वामी रचित एक प्रभातियाँ प्रभावी और बलशाली है । जो

"स्वामिनारायणनुं स्मरण करता अगम वात ओणरवाई रे,
निगम निरंत रनेती कही गावे, प्रगटने प्रमाणी रे.... स्वामिनारायण
मंगलरुप प्रगट ने मेली, परोक्षने भजे जे प्राणी रे
तप तरीथ करे देव देरां, मन न टले मसाणी रे.... स्वामिनारायण"

पहले पंक्ति में लिखा है कि स्वामिनारायण भगवान का स्मरण करने से उनकी कृपा से यह अगम्य बात पहचान में आयी है । स्वामिनारायण भगवान सभी अवतारो के अवतार लेकर अक्षरधाम में रहने वाले पुरुषोत्तम नारायण है । अनंत कोटि ब्रह्मांड के अधिपति है । स्वतंत्र भगवान एक

श्री नरनारायणदेव के २४ कलाक दर्शन के लीये देखिये वेबसाईट
www.swaminarayan.in
भारतीय समय अनुसार आरती दर्शन : मंगला आरती ५-३० ● शृंगार आरती ८-०५
● राजभोग आरती १०-१० ● संध्या आरती १८-३० ● शयन आरती २०-३०

स्वामिनारायण है । राम-कृष्ण आदि अवतार ये स्वामिनारायण भगवान के अवतार होने के कारण भगवान कहे जाते है। यह बात कब समझ में आती है ? प्रगट उपासक संतो के समागम से यह बात समझ में आती है।

स.गु. गुणातीतानंद स्वामी कहते है। प्रगट भगवान की प्राप्ति के पहचान के सिवाय करोड नियम करे लेकिन कल्याण नही होगा। प्रगट भगवान या उनके एकान्तिक संत की आज्ञा से एक नियम रखने से भी कल्याण हो जाता है। प्रगट भगवान का एकान्तिक भक्तो के सहारा बिना कल्याण होने वाला नही है। श्री स्वामिनारायण तो साक्षात् है। उनके मुक्त भी साक्षात है। सत्संग में जो वार्ता होती है। वह प्रगट स्वरुप होता है। दूसरा तो चित्र बनाये जैसे सूरज की तरह होता है। स्वामनारायण भगवान को सर्वोपरि सभी अवतारो के अवतार उनकी खुशी के लिये आज्ञा में दृढ रहेगे उसे श्रीजीमहाराज मक्खन में से घी निकालते है। उसकी शरीर देह से अलग करके ब्रह्म रुप करके अपने दिव्य अक्षरधाम में ले जाते है। प्रत्यक्ष भगवान से मिले संत के साथ आत्मशुद्धि करने से मुमुक्षु के लिये आत्यंतिक कल्याण का द्वार खुल जाता है। निष्कुलानंद स्वामी कहते है कि -

"मले प्रभु प्रगट प्रमाण रे,
कां तो तेना मणेले कल्याण रे,
तेह विना तो कोटी उपाय रे,
आत्यंतिक कल्याण न थाय रे ।"

सर्वोपरी परमात्मा का सर्वोपरि अक्षरधाम जिसे मिलता है उसे कल्याण कहा जाता है। जहाँ से पुनः पृथ्वी पर नहीं आना होता है। आत्यंतिक प्रलय में भगवान, भगवान का अक्षरधाम और अक्षरधाम के मुक्त निवास करते है। शेष नष्ट हो जाता है। स्वामिनारायण भगवान को जो भक्त जैसे पहचानता है वैसे उस भक्त की अंतकाल में गति होती है। श्रीकृष्णजी द्वारा गोलोक धाम प्राप्त होता है। सर्वोपरि सर्व अवतारी जाने तो अक्षरधाम प्राप्त होता है। आत्यंतिक कल्याण प्राप्त करना हो तो साक्षात् भगवान की प्राप्ति होनी चाहिए।

पूजा प्रगट, प्रगट भजन, करे नरनारी बहु भजनः
निःसंशय थई नरनार, भजे प्रगट प्रमाण आधार।

श्रीजीमहाराज का एक ही ध्येय था। इस समय अनंत जीवो को शरण में लेकर उनका कल्याण करना था । जो भगवान की पूजा नही करते है। जो मूर्ति को प्रणाम नही करते है। दूसरे देव में निष्ठा रखकर अधिक खर्च करता है। वह एक संख्या के बिना शून्य है और विना नमक के भोजन जैसा होता है। सभी रस मात्र और सुख भगवान की मूर्ति में है। उसी को त्याग कर मनुष्य अमृत को छोडकर विषपान करने को तैयार है। भगवान का सम्बन्धविना भक्ति, ज्ञान, वैराग्य के विना नही होता है। इस लिये प्रगट, भगवान को पहचानकर प्रेम करना है। मुक्तानंद स्वामी भी आरती में लिखते है जो -

"पुरुषोत्तम प्रगटनुं जे दर्शन करसे प्रभु (२)
काल करम से छुटी (२) कुटुंब सहित तरशे
जय सद्गुरु .....

साक्षात् भगवान को पहचानकर उनकी महिमा को समझकर और आरती के शब्दो को हम समझकर अपार आनंद मिलता है। मुक्तानंद स्वामी के हृदय में श्रीहरि जैसी महिमा है। ऐसी ही महिमा अपने हृदय में हो तो ये आरती के शब्द हमारे लिये मोक्षदायी होगा।

"सर्वे सिद्धान्त नो सिद्धांत एहज, रेवु प्रगट प्रभु परायण
मन, वचन, कर्मे करी, भजवा स्वामिनारायण"

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर की ओफिस नंबर
Mo. No. : 82380 01666
WhatSapp No. : 99099 67104

सत्संग समाचार

अहमदाबाद मंदिर में परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के चंदन का वाघा दर्शन

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर अहमदाबाद में विराजमान श्रीहरि स्वरुप ऐसे परमकृपालु श्री नरनारायण आदि देवो को प्रतिवर्ष की तरह वैशाख सुद-३ त्रीज अक्षय तृतीया के दिन चंदन-सुखड के अलौकिक वाघा दर्शन कराया जाता है। पहले हाथ से चंदन घिसकर भगवान को चंदन चढाया जाता था। मात्रा भी अधिक होती थी। इससे समस्त रुप को वस्त्र की वाघा बनाकर ठाकुरजी को लगाया जाता है। यह खुब अलौकिक दिखाई देता है। गर्मी में ठंड प्रदान करता है। ठाकुरजी के पुजारी ब्रह्मचारी संत भगवान की श्रद्धा के साथ सेवा करके श्री नरनारायणदेव और धर्मकुल की कृपा प्राप्त करते है। हरिभक्त भी इस सेवा का लाभ यजमान बनकर धन्यता अनुभव करते है।

ऐसे ठाकुरजी के चंदन के वाधा दर्शन प्रतिदिन कर सके तो एकबार अवश्य करे। हमारे जिवन को लाभ मिलेगा और परमकृपालु श्री नरनारायणदेव आप के उपर खुश होगे।(शा. नारायणमुनि स्वामी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मेहसाना द्वारा सत्संग सभा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से तथा जेतलपुर मंदिर के महंत स्वामी स.गु. शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. शा. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से तथा मेहसाना मंदिर के महंत स्वामी नारायणप्रसाददासजी के मार्गदर्शन से ता. २८-४-२०१९ को रविवार के दूसरी सभा यहाँ पर हुई। जिस में स्वामी धर्मस्वरुपदासजी (जेतलपुर) वचनामृत के उपर विवेचनक रके रसपान कराये थे। इस सभा का यजमान प.भ. जी.के. पटेल, ह. पार्थ कल्या दर्श आदि थे। विशाल संख्या में हरिभक्तोने कथा श्रवण और अल्पाहार किये थे। (शा. स्वा. उत्तमप्रियादसजी - महेसाना महंतश्री)

श्री स्वामिनारायण मंदिर धिणोज १२ वाँ पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से तथा जेतलपुर मंदिर के महंत स्वामी स.गु. शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. शा. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से तथा मेहसाना मंदिर के महंत स्वामी नारायणप्रसाददासजी के मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर धिणोज का १२ वाँ पाटोत्सव अ.नि. मूलचंददास प्रभुदास मोदी ह. पुत्री सुशीलाबेन जसवंतलाल मोदी के तरफ से मनाया गया था। ठाकुरजी की महापूजा और अभिषेक, अन्नकूट आरती मेहसाना जमीयतपुरा और हिम्मतनगर के महंत स्वामी द्वारा किया गया था। इस अवसर पर मेहसाना, करशनपुरा और मोटप गाँव के हरिभक्तोने दर्शन का लाभ लेकर धन्य हुए।(हितेन्द्रसिंह - मेहसाना मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मोटप १०६ वाँ पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से तथा जेतलपुर मंदिर के महंत स्वामी स.गु. शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. शा. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से तथा मेहसाना मंदिर के महंत स्वामी नारायणप्रसाददासजी तथा महंत शा. स्वा. उत्तमप्रियदासजी के मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर मोटप के १०६ वे पाटोत्सव अवसर पर १०६ घंटे की श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धुन की पूर्णाहुति की गयी। तारीख ८-५-१९ को हुआ था। ता. ९-५-१९ को पाटोत्सव अवसर मू.अ.मू.स.गु. गोपालानंद स्वामी द्वारा दिये गये प्रसादी के माखनिया लालजी महाराज को पंचामृत अभिषेक महेसाना के महंत स्वामी और यजमानश्री प.भ. जी.के. पटेल (पूर्व ट्रस्टी) आदि किये थे। पूजा विधिशा. स्वामी चंद्रप्रकाशदासजी (बीलीया) ने किया था। तत्पश्चात सभा, अन्नकूट आरती की गयी थी। मंदिर के ट्रस्टियो और मंत्री अशोकभाईने सुंदर सहयोग दिया।(पार्थ पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर पलसाना स्वर्ण जयंती महोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा-आशीर्वाद एवम् समस्त धर्मकुल की कृपा से उसी प्रकार स.गु. स्वामी हरिजीवनदासजी के मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर पलसाना की स्वर्ण जयंती महोत्सव उल्लास के साथ मनाया गया था।

इस अवसर के उपलक्ष्य में श्री विष्णुयज्ञ और श्रीमद् सत्संगिभूषण त्रिदिनात्मक कथा ता. ७-५-१९ से ता. ९-५-१९ तक स.गु. शा. स्वामी प्रेमस्वरुपदासजी ने वक्ता पद से किया था। पहले दिन प.पू. भावि आचार्य श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी

महाराजश्री आये थे । सभी भक्तो को आशीर्वाद प्रदान किये थे । तीन दिन तक पूरा गाँव भोजन किये थे । इस अवसर पर तीर्थो से आये संत पधारे थे । सभा संचालन स्वामी हरिकृष्णदासजीने किया था । तीन दिन तक धार्मिक सामाजिक और सांस्कृतिक कार्यक्रम अच्छी तरह से किया गया । गाँव के समस्त हरिभक्त सुंदर सेवा प्रदान किये थे ।(सोमाभाई हरजीवनदास)

श्री स्वामिनारायण मंदिर हिंमतनगर

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा-आशीर्वाद से तथा यहां के मंदिर के महंत स्वामी प्रेमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से हिंमतनगर के आस-पास गाँवो में सत्संग सभा की गई थी ।

(१) काणीयोल गाँव में महादेवजी के मंदिर प्रांगण में सुंदर सत्संग सभा का लाभ की हरिभक्तोने लिया । ता. ७-४-१९ रविवार के दिन नवा गाँव में सत्संग सभा हुई । रामनवमी ता. १४-४-१९ के दिन हिम्मनगर मंदिर के नये जगह में ठाकुरजी की रसोई संत निवास सभा मंडप और खात मुहूर्त प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के हाथो द्वारा पूर्ण हुआ था । जिसके मुख्य मेहमान प.भ. रामाभाई डाह्याभाई पटेल परिवार श्री सुरेशभाई पटेल आदिने लाभ लिया । श्री नरनारायणधेव युवक मंडल र घनश्याम महिला मंडल ने सुंदर सेवा दी थी । (जीगर भावसार - हिम्मनगर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर इलोल

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से तथा हिम्मनगर मंदिर के महंत स्वामी प्रेमप्रकासदासजी की प्रेरणा से ता. १२-५-१९ रविवार के दिन इलोल गाँव में सुंदर सत्संग सभा का आयोजन किया गया था । जिस में हिंम्मनगर के आस-पास के गाँव के हरिभक्तोने लाभ लिया था । संतो ने श्रीहरि एवम् धर्मकुल के प्रतिनिष्ठा वफादारी दर्शित किये । सम्पूर्ण आयोजन में कोठारी किरीटभाई पटेल और श्री नरनारायणदेव युवक मंडल और महिला मंडल ने सेवा किये थे । (कृणाल भगत - इलोल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर बायल (बाकरोल) मूर्ति प्रतिष्ठा

परब्रह्म परमकृपालु ईष्टदेव सर्वोपरी श्री स्वामिनारायण भगवान की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा से प.पू. बड़े महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद उसी प्रकार स.गु. शा. पी.पी. स्वामी (गाँधीनगर मंदिर महंतश्री) की प्रेस्त्ररणा मार्गदर्शन से एवम् स.गु. सा. स्वामी रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) प.भ. सतीषभाई अजमेरा (ईन्जीनियर) श्री अरविंदभाई चंदभाई पटेल भुलाभाई चंदभाई पटेल और प्रियंककुमार अरविंदभाई पटेल सभी के निर्माण कार्य के सहयोग से बायला (बाकरोल) में भव्य श्री स्वामिनारायण मंदिर का निर्माण हुआ ता. ११-५-१९ से ४-५-१९ के बीच मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा उत्सव पूर्वक मनाया गया था ।

इस अवसर पर त्रिदिनात्मक रात्रिय श्रीमद् भागवत दशम स्कन्धपारायण स.गु. शा. स्वामी चैतन्यस्वरुपदासजी (गाँधीनगर) वक्ता पद पर हुई थी । ऐसे सुंदर अलौकिक कार्य के लिये प.भ. भूलाभाई पटेल परिवार ने मंदिर के लिये भूमिदान करके आनेवाले पीढी को भी श्रेय दिया । इस अवसर पर गाँव के सभी हरिभक्तोने छोटी-बडी सेवा करके भगवान श्रीहरि को खुश किये । ता. १४-५-१९ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के हाथो से ठाकुरजी की प्राण प्रतिष्ठा वेदोक्त विधिसे पूर्ण हुई । समस्त गाँव वालो को आशीर्वाद प्रदान किये । तीर्थ से संत लोग भी आये थे ।

सम्पूर्ण प्रसंग दिव्य और भव्य था । प्रसंग के बीच सभा का संचालन स.गु. शा. स्वा. नारायणमुनिदासजी (कोटा महंतश्री) स.गु. शा. स्वा. गोपालजीवनदासजने (प्रांतिज) ने शोभा बढाया था। गाँव में मदिर बन जाने के कारण नये मुमुक्षु आश्रित हुए । यह एक बडा-अलौकिक कार्य हुआ । संत रात-दिन सत्संग के लिये अविरत प्रवृत्ति कर रहे है । (कोठारी श्री बायड मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर हिंमतपुरा (लाकरोडा) मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा-आशीर्वाद से श्री नरनारायणदेव के अन्तर्गत हिंमतपुरा (लाकरोडा) ता. माणसा मे पू.पी.पी. स्वामी (गांधीनगर) की प्रेरणा और मार्गदर्शन से विदेश में रहने वाले सभी भक्तो के साथ सहकार से समस्त ग्रामजनो के् धिक मेहनत से तन, मन, धन के समर्पण से नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर का निर्माण पूर्ण हुआ । भव्य प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव ता. २७-५-१९ से २९-५-१९ तक मनाया गया था । प्रसंग के अन्तर्गत श्रीमद् भागवत कथा, कृष्ण जन्मोत्सव, अन्नकूट, नगरयात्रा आदि उत्सव किये गये थे । चौधरी समाज के सबी भक्तोने इसमें विशेष भाग लिये थे । कथा के वक्ता पद पर स.गु. शा. स्वामी श्री रामकृष्णदासजी विराजकर सुंदर लाभ दिये थे । पू. मुनि स्वामी (कालुपुर), चैतन्य स्वामी (गाँधीनगर), गोपाल स्वामी (मोयद),

व्रजवल्लभ स्वामी (मूली), दिव्यप्रकाश स्वामी (नारायणघाट), व्रज स्वामी (कोटेश्वर) आदि संतो ने सहयोग देकर धन्य बनाये । अन्तिम दिन पू. आचार्य महाराजश्रीने आशीर्वाद दिया था। चौधरी समाज के भक्तो की निष्ठा याद की गयी । दर्शन देकर बहनो को कृतज्ञ किये थे । (कोठारी श्री सुरेशभाई चौधरी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मीठारवली मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा-आशीर्वाद से १३३ वर्ष पहले निर्माण प्राप्त कालुपुर मंदिर तथा सभी भक्तो के साथ सहकार से पू. पी.पी. स्वामी (गाँधीनगर) के मार्गदर्शन से पूर्ण हुआ । मंदिर की भव्य मूर्ति महोत्सव ५-५-१९ से ८-५-१९ तक मनाया जाता है । इसके अन्तर्गत श्रीमद् भागवत कथा, यज्ञ, नगरयात्रा, पोथीयात्रा, धर्मकुल संतो से दिव्य बना। कथा के वक्ता पद से स.गु. शा. स्वामी श्री रामकृष्णदासजी बिराजकर कथा का रसपान कराये थे । पू. महाराजश्री प्रतिष्ठा सेवा करने वाले सभी हरिभक्तो ने तन, मन, धन से सुखी हो । जीवन में भक्ति नरनारायणदेव की श्रद्धा में वृद्धि हो ऐसा आशीर्वाद दिये।(हर्षिलभाई ठक्कर)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

हरिपर गाँव में नूतन मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा

मूलीधाम निवासी श्रीराधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज के कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से एव् समस्त धर्मकुल की खुशी से मूली मंदिर अ.नि. स.गु. स्वामी विज्ञानदासजी की स्मृतिमें उनके शिष्य मंडल स्वामी जीष्णुचरणदासजी, शा. धर्मवल्लभदासजी तथा स.गु. स्वामी भक्तिहरिदासजी की प्रेरणा एवम् सुरेन्द्रनगर मंदिर के महंत स.गु. स्वामी प्रेमजीवनदासजी के साथ-सहकरा से हरिपुर गाँव में भाईयो ने पांच शिखर का सुंदर हरि मंदिर और बहनो के मंदिर में ठाकुरजी के नूतन सिंहासन तथा सिंहासन पुनः प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव ता. ३०-४-१९ से ६-५-१९ के बीच भव्यता से मनाया गया।

इस अवसर के उपलक्ष्य में श्रीमद् सत्संगिजीवन सप्ताह पारायण स्वामी त्यागवल्लभदासजी (सुरेन्द्रनगर) और शा.स्वा. दिव्यप्रकाशदासजी (मूली) के वक्ता पद पर हुई थी।

त्रिदिनात्मक श्रीहरि यज्ञ, अन्नकूट, नगरयात्रा रात्रिय सांस्कृतिक कार्यक्रम, व्योपमाला जैसे अलौकिक कार्यक्रम पूर्ण हुए थे।

ता. ६-५-१९ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री संत-पार्षद मंडल के साथ आये थे । और दोनो मंदिर में ठाकुरजी की प्राण प्रतिष्ठा वेदोक्त विधिस्वयं द्वारा किये थे । इसके बाद समस्त सभा को आशीर्वाद दिये थे। सभा संचालन शा. भक्तिनंदन स्वामी और शा. व्रजवल्लभदासजीने शोभा बढाया था। समस्त आयोजन और मार्गदर्शन कोठारी स्वामी कृष्णवल्लभदासजीने किया था । तीर्थ स्थान से संत और सांख्ययोगी बहने आयी थी।

बहनो को दर्शन आशीर्वाद देने के लिये प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री भी आये थे। रसोई की सेवा में वत्सल स्वामी, नित्यप्रकाश स्वामी और सत्संगसागर स्वामी रहे थे । (शैलेन्द्रसिंह झाला - प्रति अनिल दूधरेजिया)

श्री स्वामिनारायण मंदिर बलदाना पाटोत्सव

मूलीधाम निवासी श्रीराधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज के कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से उसी प्रकार सुरेन्द्रनगर मंदिर के स.गु. महंत स्वामी प्रेमजीवनदासजी की प्रेरणा से बलदाना गाँव के दोनो श्री स्वामिनारायण मंदिर का प्रथम पाटोत्सव ता. ११-५-१९ के दिन विधिवत रुप से मनाया गया। इस अवसर पर ता. ७-५-१९ से ११-५-१९ तक आख्यान रात्रि कथा शा. स्वा. सत्संगसागरदासजी के वक्ता पद पर हुई । ठाकुरजी का अभिषेक अन्नकूट सुंदर रुप से पूर्ण हुआ था। सम्पूर्ण आयोजन सुरेन्द्रनगर मंदिर के कोठारी स्वामी कृष्णवल्लभदासजी के मार्गदर्शन में हुआ। गाँवो के हरिभक्तो ने कथा श्रवण, देव दर्शन करके प्रसाद लिये । अन्य सेवा में पूजारी स्वामी विश्वस्वरुपदासजी पूजारी स्वामी शांतिप्रकाशदासजी और पार्षद कनु भगत थे।(शैलेन्द्रसिंह झाला)

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर शिकागो

सर्वोपरी श्री स्वामिनारायण भगवान की परम कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से मीडवेस्ट श्री स्वामिनारायण मंदिर शिकागो में सत्संग अधिक विकसा है । यहाँ के मंदिर में ठाकुरजी की सेवा पूजा श्रृंगार आरती इत्यादि ब्रह्मचारी के.पी. स्वामी अत्याधिक प्रेमभाव श्रद्धा से करके हरिभक्तो को प्रसन्न किये थए। यहाँ पर नेसवील से आये शा. स्वामी सत्यस्वरुपदासजी (सुरेन्द्रनगर) गुरु स.गु. स्वामी प्रेमजीवनदासजी ने स.गु. निष्कुलानंद काव्य अन्तर्गत

अवतार चिंतामणी की कथा संगीत के माध्यम से हरिभक्तो को आनंदित किये।

यहाँ का युवक मंडल भी अधिक सक्रिय था। प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा प्रेरणा से सभी लोग सेवा में अग्रसर रहे थे।(वसंत त्रिवेदी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर विहोकन

सर्वोपरी श्री स्वामिनारायण भगवान की परम कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद तथा विहोकन मंदिर के महंत स्वामी नरनारायणदासजी की प्रेरणा सत्संग की अच्छी प्रवृत्ति चलती है। अपने आई.एस.एस.ओ. के इतिहास में सर्व प्रथण 'मदर-डे' मनाया गया था। पू. भक्तिमाता की २.५ फुट की मूर्ति बनाई गयी। अपने मंदिर में गुजराती का क्लास के ३० बच्चो ने फूलो से भक्ति माता का फूलो से पूजन करके केक काटकर आरती उतारे थे। सभी हरिभक्तोने पूजा किया था। स्वामीने कथा में माँ-पिता की सेवा का महत्व बताये थे। यहाँ के मेडिकल कैम्प में १०० जितने भाई-बहनोने भाग लिया था। आठ डॉकटर अलग-अलग विभाग दाँत, आँख, कान तथा फिजीकल निरीक्षण किये थे। जिस में यहाँ के युवकोने सुंदर सेवा प्रदान किये थे। (बलदेवभाई पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर एलनटाउन श्री हनुमान जयंती उत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा यहाँ मंदिर के महंत स्वामी डी.के. स्वामी के सुंदर मार्गदर्शन से हमारे श्री स्वामिनारायण मंदिर एलनटाउन में श्री हनुमान जयंती के शुभ दिन पर श्री हनुमानजी का पूजन-अर्चन आरती के बाद कथा के रुप में महंत स्वामीने श्री हनुमानजी की महिमा को बताये थे। श्री हनुमान चालीसा का पाठ जनमंगल पाठ समूह में किया गया था। यहाँ मंदिर में सेवा करने वाले सभी भक्तो को याद करके उनका सन्मान किया गया था। प्रेसि. श्री भीखाभाई देश-विदेश में अपने मंदिर में होने वाले उत्सवो की जानकारी दिये थे। रसोई में भी कार्य करने वालो का सन्मान किया गया था।(प्रवीण शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर ह्यूस्टन श्री हनुमान जयंती उत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से अपने श्री स्वामिनारायण मंदिर ह्युस्टन में विकेन्ड शनिवार को शायं ५ से ८ के बीच मंदिर में सेवापूजा करने वाले सुव्रत स्वामी और महेन्द्र भगत द्वारा सभा में श्री हनुमान जयंती के निमित्त संगीत सुंदर धुन एवम ताल में कीर्तन किया गया था। श्री हनुमानजी की महिमा बताई गई। दादा के पूजन-अर्चन के बाद समूह में हनुमान चालीसा एवम् सुंदर कांड पाठ किया गया था। सुंदर मारुति यज्ञ - अन्नकूट किया गया था। यजमानो का सन्मान करने के बाद पूर्णाहुति की आरती का दर्शन करके सभी लोग धन्य हुए।(प्रवीण शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया में प.पू. बड़े महाराजश्री का ७५ वाँ प्रगटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से अपने स्वामिनारायण मंदिर में शनिवार विकेन्ड के बीच हमारे प.पू. बड़े महाराजश्री का ७५ वाँ प्रगटोत्सव महंत स्वामी और भरत भगत के मार्गदर्शन से सभी हरिभक्तोने उल्लास पूर्वक मना या गया था।

सर्व प्रथम महामंत्र धुन-कीर्तन भक्ति के बाद महंत स्वामीने श्रीहरि के पवित्र कुल धर्मकुल की महिमा महात्म्य बताये थे। प.पू. बड़े महाराजश्री का दिव्य संकल्प श्री स्वामिनारायण म्युजियम के बारे में सबको जानकारी दी गयी थी। अंत में प.पू. बड़े महाराजश्री की तसवीर की पूजन करके केक काटकर प्रागट्योत्सव मनाया गया था। यजमानो के सन्मान के बाद सभी प्रसाद लेकर अनपे घर गये। (प्रवीण शाह)

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

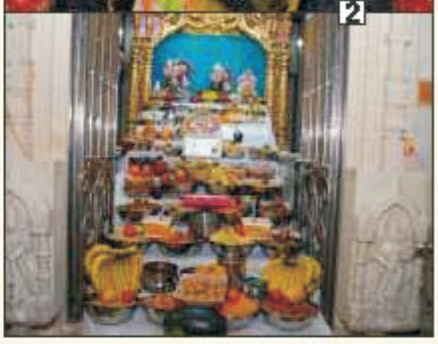

(१) पेथापुर श्री स्वामिनारायण मंदिर के पाटोत्सव अवसर पर ठाकुरजी के पुष्पाभिषेक करते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री। (२) धोलका मंदिर के पाटोत्सव अवसर पर ठाकुरजी का अभिषेक तथा अन्नकूट दर्शन। (३) मोढासा (नालंदा-२) मंदिर में आम्रोत्सव। (४) विभोज मंदिर के पाटोत्सव अवसर पर ठाकुरजी का अभिषेक करते हुए महेसाना मंदिर के महंत स्वामी। (५) बाकरोल मंदिर में सत्संग सभा का लाभ उठाते हुए हरिभक्त। (६) दहेगाम मंदिर में सत्संग सभा का लाभ उठाते हुए हरिभक्त।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at
Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2018-2020
issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2020

(१) श्री स्वामिनारायण म्यूजियम में ब्रिटिश हाईकमिश्नर परिवार के साथ मुलाकात किये उस समय अपने सम्प्रदाय के बारे में माहितगार करते हुए प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री। (२) न्युजीलैण्ड मंदिर के ११ वे पाटोत्सव अवसर पर ठाकुरजी का दर्शन। (३) स्वीडन में युवा कैम्प में युवा हरिभक्तो के साथ प.पू. लालजी महाराजश्री। (४) एडमिन्टन - कैनेडा अपने मंदिर में आमोत्सव। (५) भारत में भाजपा के विजय को सिनेमीन्सन (न्यूजर्सी) सहित विदेश के मंदिरो में भी मनाया गया था।

www.swaminarayan.in info@swaminarayan.in
Daily Darshan Whatsapp no. +91 9909 967104
Follow Us @ nndkalupurmandir

Praful Kharsani